संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 41
पृष्ठ 8
बुधवार
29 अक्टूबर 2025
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- बदलते मौसम में बीमारियों से बचाएगा...

विचार- आसियान में मोदी की गैरहाजिरी

खेल- सूर्यकुमार की फॉर्म पर रहेगी नजर...

जोड़े साहिब यात्रा में शामिल हुए सीएम योगी, कहा-

गुरु परंपरा ने भारत को दिया त्याग और बलिदान का संदेश

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गुरु परंपरा ने भारत को केवल आस्था नहीं, बल्कि राष्ट्र की रक्षा, सेवा और बलिदान का आदर्श भी दिया है। सिख समुदाय की आस्था का प्रतीक चरण सुहावे गुरु चरण यात्रा के पवित्र जोड़ा साहिब का लखनऊ में भव्य स्वागत हुआ। यह यात्रा सिख समुदाय के दसवें गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह जी और माता साहिब कौर के पवित्र जोड़ा साहिब से जुड़ी है, जो सिख आस्था का अत्यंत पवित्र प्रतीक मानी जाती है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस विरासत को अक्षुण्ण रखें और आने वाली पीढ़ियों तक इसकी प्रेरणा पहुंचाएं। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी भी मौजूद रहे। लखनऊ के यहियागंज गुरुद्वारे में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवाणी सुनी और यात्रा सदस्यों को पटुका पहनाकर सम्मानित किया। गुरुद्वारा कमेटी ने योगी को अंग वस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा हमारी परंपरा में यह कहा गया है, जिथे जाए बहे मेरा सतगुरु, सो थान सुहावा राम राजे। अर्थात जहां भी गुरु महाराज के पावन चरण पड़ते हैं, वह स्थान रामराज्य की तरह पवित्र और पुण्यभूमि बन जाता है। यह यात्रा हमें उस गौरवशाली गुरु परंपरा से जोड़ती है, जिसने भारत की संस्कृति, साहस और बलिदान की भावना को नई दिशा दी। योगी ने केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी की उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह यात्रा गुरु तेग बहादुर जी महाराज के 350वें शहीदी दिवस के अवसर पर शुरू हुई है। यह केवल श्रद्धा की यात्रा नहीं, बल्कि त्याग, बलिदान और राष्ट्र समर्पण की प्रेरणा देने वाली यात्रा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सिख गुरुओं का भारत की सनातन परंपरा में योगदान अविस्मरणीय है। गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु गोविंद सिंह जी महाराज और उनके चार साहिबजादों ने जिस प्रकार धर्म, देश और मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया, वह भारत के इतिहास को नई प्रेरणा देता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि लगभग ढाई सौ वर्षों से गुरु महाराज के पावन चरण पादुकाएं, जो पहले अखंड भारत के हिस्से पाकिस्तान में थीं, अब पटना साहिब में स्थापित की जा रही हैं। दिल्ली से शुरू हुई यह यात्रा पूरे देश में गुरु परंपरा के प्रति सम्मान और गौरव का भाव जगाती जा रही है। उन्होंने कहा कि लखनऊ का यहियागंज गुरुद्वारा इसलिए भी विशेष है क्योंकि गुरु तेग बहादुर जी और गुरु गोविंद सिंह जी महाराज की स्मृतियां इस स्थान से जुड़ी हैं। यह गुरुद्वारा हमारी साझा आस्था और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। योगी ने सिख समुदाय के प्रति आदर व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु परंपरा ने भारत को केवल आस्था नहीं, बल्कि राष्ट्र की रक्षा, सेवा और बलिदान का आदर्श भी दिया है। उन्होंने कहा कि हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस विरासत को अक्षुण्ण रखें और आने वाली पीढ़ियों तक इसकी प्रेरणा पहुंचाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सिख समाज की यह यात्रा केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शन है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से आग्रह किया कि वे इस गुरु चरण यात्रा को राष्ट्रीय एकता और आध्यात्मिक जागरण के संदेश के रूप में आगे बढ़ाएं। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, यूपी कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना, राज्यमंत्री बलदेव सिंह औलख, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य सरदार परबिंदर सिंह के अलावा गुरुद्वारा कमेटी के पदाधिकारी व कई जनप्रतिनिधिगण मौजूद रहे।

चक्रवाती तूफान मोंथा का कहर

तमिलनाडु में भारी बारिश से स्कूल बंद, हाई अलर्ट जारी

अमरावती, एजेंसी। चक्रवाती तूफान मोन्था भारत के तटीय इलाकों के लिए खतरा बना हुआ है। तूफान के कारण दक्षिण भारत में भारी बारिश हो रही है। यहा तक की मैदानी इलाकों में भी लगातार बारिश हो रही है। मैदानी इलाकों में अचानक से बदलाव आ गया है। पूरे भारत में मोंथा का असर दिखाई दे रहा है। आंध्र प्रदेश पर गंभीर मौसम का खतरा मंडरा रहा है क्योंकि दक्षिण–पूर्वी बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना गहरा दबाव चक्रवात मोन्था में मजबूत हो रहा है, जो इस मौसम का पहला बड़ा तूफान है। चक्रवात आज तट से टकराने वाला है। आंध्र प्रदेश और ओडिशा को हाई अलर्ट पर रखा गया है, जिससे एहतियाती निकासी और व्यापक बाद की तैयारी के उपाय किए जा रहे हैं। दूसरी तरफ चक्रवाती तूफान 'मोंथा' के आंध्र प्रदेश की ओर बढ़ने के साथ ही तमिलनाडु के तिरुवल्लूर जिले में मंगलवार को भारी बारिश होने की आशंका है। तिरुवल्लूर जिला आपदा प्रबंधन के अनुसार, मंगलवार सुबह छह बजे तक पिछले 24 घंटों में तिरुवल्लूर के पोन्नेरी और अवादी में क्रमशः 72 मिलीमीटर और 62 मिलीमीटर बारिश हुई। तिरुवल्लूर जिला कलेक्टर एम प्रताप ने भारी बारिश की आशंका के चलते मंगलवार को स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिया। चेन्नई स्थित क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र (आरएमसी) के नवीनतम बुलेटिन के अनुसार, चेंगलपट्टू, चेन्नई, कांचीपुरम, रानीपेट, तिरुवल्लूर, तिरुवन्नामलाई, वेल्लोर, तिरुपत्तूर, विल्लुपुरम, तेनकासी, तिरुनेलवेली, थूथुकुडी और कन्याकुमारी जिलों में अलग–अलग स्थानों पर आंधी और बिजली गिरने के साथ मध्यम बारिश होने की संभावना है। आरएमसी ने मछुआरों को 29 अक्टूबर तक समुद्र में न जाने की सलाह दी है। बुलेटिन में कहा गया है कि बंगाल की खाड़ी में चक्रवात 'मोंथा' के कारण सतह पर हवाएं 90 से 100 किमी प्रति घंटे की गति तक पहुंचने की उम्मीद है, जो बढ़कर 110 किमी प्रति घंटे तक पहुंच सकती है। थाई में 'मोंथा' का अर्थ सुगंधित फूल होता है।

गलत फैसले के चलते 12 साल काटी जेल की सजा, अब मांगा मुआवजा, सुप्रीम कोर्ट ने दी सुनवाई की मंजूरी

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐसे शख्स की याचिका पर सुनवाई के लिए सहमति दी है, जिसने बलात्कार और हत्या के मामले में सुप्रीम कोर्ट की तरफ से बरी किए जाने से पहले 12 वर्ष तक जेल में काटे। चौंकाने वाली बात यह है कि इस व्यक्ति को निचली अदालत की तरफ से मौत की सजा सुनाई गई थी और बॉम्बे हाईकोर्ट ने उसकी सजा बरकरार रखी थी। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने उसे बरी कर दिया। इसी मामले में याचिकाकर्ता ने गलत गिरफ्तारी, मुकदमे और सजा के लिए मुआवजे की मांग की है। सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस विक्रम नाथ और संदीप मेहता की पीठ ने सोमवार को इस मामले की सुनवाई के दौरान कहा, "नोटिस जारी किया जाए, इसे 24 नवंबर तक उत्तरदायी बनाया जाए। हम इस मामले में अटॉर्नी जनरल या सॉलिसिटर जनरल से न्यायालय की सहायता का अनुरोध करते हैं।"

क्या है मामला, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के लिए भरी हामी?

महाराष्ट्र के ठाणे में 2013 में गिरफ्तार किए गए शख्स को मार्च 2019 में सत्र न्यायालय ने मौत की सजा सुनाई थी। नवंबर 2021 में बॉम्बे हाईकोर्ट ने अपने फैसले में मौत की सजा को बरकरार रखा था। हालांकि, मई 2025 में सुप्रीम कोर्ट ने उसे सभी आरोपों से बरी कर दिया। कोर्ट ने जांच की विश्वसनीयता पर सवाल उठाते हुए उसे त्रुटिपूर्ण करार दिया था। अदालत ने अपने निर्णय में कहा था, "यह मामला एक और उदाहरण है कि कैसे सतही और लापरवाहीपूर्ण जांच एक गंभीर अपराध के मामले में अभियोजन की विफलता का कारण बनी।" 41 वर्षीय यह व्यक्ति, उत्तर प्रदेश के एक गांव से है। उसने अपनी याचिका में कहा है कि उसे अवैध गिरफ्तारी और मनगढ़ंत सबूतों के आधार पर गलत मुकदमे और परेशानियों का सामना करना पड़ा। याचिका में कहा गया है कि सिर्फ रिहा कर देने से न्याय नहीं होता। राज्य को आर्थिक और मानसिक क्षति के लिए उचित मुआवजा देना चाहिए, क्योंकि याचिकाकर्ता ने 12 वर्ष अन्यायपूर्ण कैद में बिताए।

ईरान में बंधक बने चार युवाओं की वतन वापसी, ऑस्ट्रेलिया जाने की चाहत में बने थे मानव तस्करों का शिकार

गुजरात, एजेंसी। गुजरात के गांधीनगर जिले के मानसा तालुका के बापुपुरा गांव के चार युवक–युवती जो ईरान में बंधक बनाए गए थे, आखिरकार सुरक्षित रूप से भारत लौट आए हैं। ये सभी युवक ऑस्ट्रेलिया जाने की कोशिश में मानव तस्करों के जाल में फंस गए थे। विदेश में हुए इस अपहरण मामले ने गुजरात में हड़कंप मचा दिया है और अब पुलिस इसकी गहराई से जांच कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार, पीड़ितों में अजयकुमार कांतिभाई चौधरी (31), प्रियाबेन अजयकुमार चौधरी (25), अनिलकुमार राघजीभाई चौधरी (35) और निखिलकुमार रमणभाई चौधरी (28) शामिल हैं। ये चारों 19 अक्तूबर को मानसा से दिल्ली के लिए रवाना हुए थे और फिर बैंकॉक व दुबई होते हुए एमिरेट्स एयरलाइंस से तेहरान पहुंचे। वहां इमाम खुमैनी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर इन्हें 'बाबा' नाम के व्यक्ति ने अगवा कर लिया। सूत्रों के मुताबिक, अपहरणकर्ताओं ने पीड़ितों के परिवारों से लगभग दो करोड़ रुपये की फिरौती मांगी थी।

सरकार ने अग्निवीरों के साथ किया धोखा : कांग्रेस

नयी दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस ने सरकार पर अग्निवीरों के साथ धोखा करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि पहले सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें सरकारी नौकरी देने का वादा किया गया था लेकिन अब गृह मंत्रालय ने अधिसूचना जारी कर बताया है कि रिटायर अग्निवीरों को देश की टॉप दस प्राइवेट सिक्योरिटी एजेंसियों में रखा जाएगा। कांग्रेस पूर्व सैनिक विभाग के प्रमुख कर्नल रोहित चौधरी ने मंगलवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में अधिसूचना को अग्निवीरों के साथ धोखा बताया और कहा कि यह योजना देश की सुरक्षा और युवाओं के लिए घातक है इसलिए इस योजना को खत्म किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार हमारे जवानों के साथ सही नहीं कर रही है। ये साफ तौर पर देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ हो रहा है। कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव से पहले ही श्जय जवान अभियानश चलाया था और अब 'जय जवान अभियान' का दूसरा भाग चल रहा है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी लगातार कह रहे हैं कि देश को कम प्रशिक्षित सैनिक दिए जा रहे हैं और मोदी सरकार सैनिकों की पेंशन काटकर अपने पूंजीपति मित्रों की तिजोरी भर रही है। कर्नल चौधरी ने कहा हम सभी वचनबद्ध हैं कि अग्निवीर योजना देश की सुरक्षा और युवाओं के लिए घातक है, ये खत्म होनी चाहिए। मोदी सरकार अगर ऑपरेशन सिंदूर में अच्छा काम करने वाले सैनिकों को प्रोत्साहन नहीं दे सकती थी तो उन्हें धोखा भी नहीं दिया जाना चाहिए था। मोदी सरकार ने वादा किया था कि हम अग्निवीरों को सेवानिवृत्त होने के बाद सरकारी नौकरी देंगे लेकिन अब गृह मंत्रालय ने अधिसूचना जारी की है–जिसमें बताया गया है कि रिटायर होने वाले अग्निवीरों को देश की टॉप 10 प्राइवेट सिक्योरिटी एजेंसी में रखा जाएगा।ष उन्होंने तंज करते हुए सवाल किया कि मोदी सरकार ने सिर्फ 25 प्रतिशत अग्निवीरों को स्थायी किया है तो बाकी वापस लौटकर क्या भाजपा दफ्तर या किसी कंपनी के बाहर दरबान की नौकरी करेंगे।

आठवें वेतन आयोग की रूपरेखा को कैबिनेट की मंजूरी

नई दिल्ली, एजेंसी। कैबिनेट ने 8वें वेतन आयोग के तहत विचार होने वाले विषयों को मंजूरी दी। सुप्रीम कोर्ट की पूर्व न्यायाधीश रंजना प्रकाश देसाई को अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। आयोग में एक अध्यक्ष, एक सदस्य (अंशकालिक) और एक सदस्य–सचिव शामिल होंगे। सूचना व प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि आठवां वेतन आयोग 18 महीने के भीतर सिफारिशें प्रस्तुत करेगा, जो 1 जनवरी 2026 से लागू होने की संभावना है। मंत्री ने बताया कि आयोग की सिफारिशें रक्षा सेवा कर्मियों और लगभग 69 लाख पेंशनभोगियों सहित लगभग 50 लाख केंद्र सरकार के कर्मचारियों को कवर करेंगी। केंद्रीय कैबिनेट ने चालू रबी सीजन (2025–26) के लिए पोषक तत्व आधारित 37,952 करोड़ रुपये की सब्सिडी योजना को भी मंजूरी दे दी है। सरकार ने प्रति किलोग्राम के आधार पर नाइट्रोजन (एन), फास्फोरस (पी), पोटाश (के) और सल्फर (5) के लिए सब्सिडी अधिसूचित की है। वैष्णव ने बताया कि इस रबी के लिए सब्सिडी दरें पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 14,000 करोड़ अधिक रखी गई हैं।

पीएम मोदी ने छठ के समापन पर दी शुभकामनाएं, बोले– दिखी भारत की गौरवशाली परंपरा

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को चार दिवसीय छठ पर्व के समापन पर श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दीं और कहा कि इससे देश की भव्य परंपरा की दिव्य झलक देखने को मिली। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''भगवान सूर्यदेव को प्रातःकालीन अर्घ्य के साथ आज महापर्व छठ का शुभ समापन हुआ। चार दिवसीय इस अनुष्ठान के दौरान

छठ पूजा की हमारी भव्य परंपरा के दिव्य दर्शन हुए।'' उन्होंने कहा, ''समस्त व्रतियों और श्रद्धालुओं सहित पावन पर्व का हिस्सा बने अपने सभी परिवारजनों का हृदय से अभिनंदन। छठी मइया की असीम कृपा से आप सभी का जीवन सदैव आलोकित रहे। उत्सव शुरू होने से एक दिन पहले, प्रधानमंत्री ने नागरिकों से छठ पूजा के गीतों को साझा करने का आग्रह किया और त्योहार के दौरान उन्हें और भी ज़्यादा प्रचारित करने का संकल्प लिया। उन्होंने तीसरे दिन भी ऐसा ही किया, एक गीत साझा किया और अनुष्ठान करने वाले श्रद्धालुओं को शुभकामनाएँ दीं। ''देश भर में मेरे सभी परिवारजनों को छठ पूजा की संध्या अर्घ्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

मानव और प्रकृति के बीच रिश्ता कायम करती है: आंवला नवमी

डॉ० प्रदीप चित्रांशी

भारत की मूल संस्कृति ,गाँव के आँगन में पलती है जहाँ वृक्ष, नदी और पर्वत को पवित्र मानकर त्योहार मनाने की परम्परा आज भी विद्यमान है। यही परम्परा पर्यावरण– संरक्षण में महत्वपूर्ण तथा सकारात्मक भूमिका अदा कर,मानव और प्रकृति के बीच आत्मीय रिश्ता कायम करती है। रामायण, महाभारत, गीता और पुराणों आदिक धार्मिक ग्रंथों में पेड़–पौधों को संरक्षित करने के लिए नसीहतों के साथ उन्हें देवतुल्य भी बताया गया है। वेद में वृक्षों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि वृक्षों में देवता का वास होता है।

मूलतः ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णरूपिणें

अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाए ते नमरू।

अर्थात वृक्ष के मूल में ब्रह्मा,मध्य में विष्णु और शिरोभाग में शिव का वास होता है।

भारतीय संस्कृति में प्रकृति के विभिन्न अंगों को देवता तुल्य मानकर उनकी पूजा–अर्चना की जाती है। इसी परंपरा का निर्वहन करते हुए कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की नवमी को आंवला के वृक्ष की पूजा का विधान है जो धार्मिक ग्रंथों और लोककथाओं में वर्णित है।

आंवला युफोरबिएसी परिवार का पौधा है। यह भारतीय मूल का एक महत्वपूर्ण फल है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे– हिन्दी में आंवला, संस्कृति में धात्विक या आमलकी, बांग्ला एवं उड़िया में अमला या मालकी, तमिल और मलयालम में नेल्लोर, तेलगु में अमलीजामा, गुरुमुखी में अमोल फल और अंग्रेजी में ऐप्लिकेशन, माइरोबालान या इंडियन गूजबेरी के नाम से जाना जाता है। अपने अद्वितीय औषधीय एवं पोषक गुणों के कारण भारतीय पौराणिक लोककथाओं में अद्भुत छटा बिखेरते हुए अपनी

गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराते हुए दिखाई देते हैं।

आंवले की पूजा के पीछे पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं। एक कहावत में जिस तरह आदिदेव शिवजी के आँसुओं से रुद्राक्ष की उत्पत्ति हुई उसी प्रकार ब्रह्मा जी के आँसुओं से आँवले के पेड़ की उत्पत्ति हुई है। कहा जाता है कि जब पूरी पृथ्वी जलमग्न हो गई थी तब ब्रह्मा जी के मन में सृष्टि दुबारा शुरू करने का विचार आया,विचार आते ही ब्रह्मा जी परब्रह्म की तपस्या करने लगे। ब्रह्मा जी की तपस्या से खुश होकर भगवान विष्णु प्रकट हुए जिन्हें देखकर ब्रह्मा जी रोने लगे और उनके आँसू भगवान विष्णु के चरणों पर गिरने लगे।ब्रह्मा जी के इन्हीं आँसुओं से आँवले के वृक्ष की उत्पत्ति हुई।

दूसरी कथा में कार्तिक के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि पर आँवले के वृक्ष की पूजा करने से माँ लक्ष्मी जी की विशेष कृपा प्राप्त होती है। कथा के अनुसार प्राचीन काल में कार्तिक के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि पर आँवले के वृक्ष के नीचे महादेव और भगवान विष्णु जी की पूजा की थी। उसी समय से इस तिथि पर आँवले के पूजन की परम्परा शुरू हो गई। पद्म पुराण के अनुसार अक्षय नवमी के दिन जो व्यक्ति व्रत व पूजन करते हैं वे सब पापों से मुक्त हो जाते हैं।

एक अन्य कथा के अनुसार चँदाला नाम का एक व्यक्ति जब फल तोड़ने के लिए पेड़ के ऊपर चढ़ रहा था,उसी समय उसका पैर फिसल गया।पेड़ से गिरते समय उसकी मौत हो गई। मृत्यु के पश्चात यमराज जी उसकी आत्मा लेने आए मगर नहीं ले जा सके क्योंकि मृत्यु से पूर्व उसने आँवले की पूजा की थी और प्रसाद ग्रहण किया था।

बौद्ध धर्म में इस फल से जुड़ी अत्यंत महत्वपूर्ण कथा के अनुसार यह फल अशोक द्वारा बौद्ध संघ को दिया गया अन्तिम उपहार है जिसका विवरण अशोकावदान में मिलता है । इसके अतिरिक्त कई पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं। इन्हीं पौराणिक कथाओं की चर्चा करते हुए स्त्री और पुरुष नवमी के दिन आँवले के वृक्ष की पूजा करते हुए, वृक्ष के नीचे भोजन कर, अपने परिवार की संपन्नता के लिए मंगलकामना करते हैं।

वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज समेत देश के 18 शहरों में चलेगी वाटर मेट्रो, घाटों पर बनेंगे स्टेशन

प्रयागराज। देश के 18 शहरों में वॉटर मेट्रो चलाई जाएगी। जलमार्ग से आम लोग ट्रैफिक जाम से बचते हुए यात्रा कर सकेंगे। इससे प्रदूषण भी नहीं होगा। इसमें वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज भी शामिल है। पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय के तहत भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूएआई) ने इस प्रोजेक्ट का खाका तैयार किया है।

वॉटर मेट्रो के लिए बनारस, पटना, श्रीनगर में हुए सर्वेक्षण में सकारात्मक परिणाम मिले हैं। बनारस में इसके आठ स्थानों पर स्टेशन प्रस्तावित हैं जहां से लोग वॉटर मेट्रो में सवार हो सकेंगे। इनमें रामनगर स्थित आईडब्ल्यूएआई टर्मिनल, शास्त्री घाट, संत रविदास घाट, चेतसिंह घाट, काशी विश्वनाथ मंदिर (ललिता घाट), पंचगंगा घाट, नमो घाट, आदिकेशव घाट हैं।

राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या एक पर स्थित बनारस, अयोध्या, प्रयागराज, पटना, कोलकाता शहरों में यह मेट्रो चलेगी। बनारस में आईडब्ल्यूएआई ने ट्रैफिक अध्ययन पूरा कर लिया है। इसमें वॉटर मेट्रो के संचालन को जरूरी और उपयोगी माना गया है। इस श्रेणी में श्रीनगर, पटना, अहमदाबाद भी शामिल हैं।

भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों के अनुसार वॉटर मेट्रो पर्यावरण हितैषी होने के साथ लोगों को सुरक्षित, सुगम यात्रा का विकल्प मुहैया कराएगी। वॉटर मेट्रो शहरों में जनसंख्या के बढ़ते दबाव को देखते हुए भविष्य में सार्वजनिक परिवहन का सबसे बेहतर माध्यम साबित होगा।

कोच्चि मेट्रो रेल लिमिटेड को जिम्मेदारी

अर्बन वॉटर मेट्रो प्रोजेक्ट के तहत आईडब्ल्यूएआई ने कोच्चि मेट्रो रेल लिमिटेड को सर्वेक्षण की जिम्मेदारी दी है। 31 दिसंबर 2025 तक इन सभी शहरों में सर्वे पूरा कर रिपोर्ट सौंपने का निर्देश आईडब्ल्यूएआई ने दिया है।

ये 18 शहर हैं शामिल

पूर्वोत्तर में गुवाहाटी, तेजपुर, डिब्रूगढ़, उत्तर में श्रीनगर, अयोध्या, प्रयागराज, बनारस, पूर्व में पटना, कोलकाता, कटक, दक्षिण में कोल्लम, अलप्पुझा, मंगलौर, पश्चिम में गांधीनगर (अहमदाबाद), गोवा, सूरत, अंडमान–निकोबार, लक्षद्वीप।

रोपवे निर्माण के लिए परेड में अस्थायी गोदाम बनाने से सेना ने रोका

प्रयागराज। संगम क्षेत्र में रोपवे निर्माण के लिए परेड में गोदाम बनाने से रोक दिया गया है। रोपवे का निर्माण करने वाली एजेंसी परेड में अस्थायी गोदाम का निर्माण करा रही थी। सेना ने यह कहकर काम रुकवा दिया कि निर्माण की अनुमति नहीं ली गई है। सेना की ओर से की गई आपत्ति के बाद गोदाम का निर्माण रोक दिया गया। अब परेड में अस्थायी गोदाम बनाने के लिए सेना से अनुमति मांगी जाएगी। रोपवे का निर्माण शुरू करने के सिलसिले में कार्यदायी एजेंसी रवि इंफ्रा के विशेषज्ञों की टीम पिछले शुक्रवार को प्रयागराज आई थी। विशेषज्ञों ने रोपवे निर्माण स्थल को देखने के बाद जल्द काम शुरू करने का निर्णय लिया।

उसी क्रम में एजेंसी ने परेड में गोदाम बनाने का काम शुरू किया। गोदाम बनाने के बाद एजेंसी आगे का काम शुरू करना चाहती थी। रक्षा संपदा अधिकारी ने परेड में अस्थायी गोदाम का काम रोकने की जानकारी होने से इनकार किया। प्रयागराज विकास प्राधिकरण के कार्यवाहक मुख्य अभियंता कौशलेंद्र चौधरी ने बताया कि गोदाम का निर्माण रोका गया है। अब गोदाम बनाने के लिए अनुमति मांगी जाएगी। संगम क्षेत्र में 210 करोड़ की लागत से रोपवे बनाने की योजना है। परेड और अरैल के 2200 मीटर लंबे 50 सीटों वाले रोपवे संचालन के लिए केबल लगाने के लिएझ तीन पोल लगाए जाएंगे। इसे बनाने की जिम्मेदारी भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की इकाई नेशनल हाईवे लॉजिस्टिक लिमिटेड को सौंपी गई है। रेलवे की इकाई राइट्स ने इसका डीपीआर तैयार किया है। रोपवे का मॉडल प्रयागराज मेला प्राधिकरण के कार्यालय में रखा गया है।

हालो कोर फाइबर से बढ़ेगी जांच की सटीकता

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के वैज्ञानिक एक नई और अत्याधुनिक तकनीक पर कार्य कर रहे हैं, जो भविष्य में मेडिकल जांच के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। यह तकनीक 'हॉलो कोर फाइबर ऑप्टिक सेंसर' के रूप में विकसित की जा रही है, जो रक्त, प्रोटीन और विभिन्न बायोमार्कर की पहचान को न केवल अधिक सटीक बल्कि अत्यंत तेज करेगा। इस सेंसर की मदद से बीमारियों की प्रारंभिक पहचान, रोग की प्रगति की निगरानी और मरीज के स्वास्थ्य की नियमित जांच बेहद आसान और विश्वसनीय की जा सकेगी। यह सेंसर मेडिकल डायग्नोस्टिक्स और हेल्थ मॉनिटरिंग के क्षेत्र में नई दिशा प्रदान करेगा।

भौतिकी विभाग के प्रोफेसर रजनीश कुमार वर्मा और डॉ. तीरंजिता श्रीवास्तव इस परियोजना का नेतृत्व कर रहे हैं। यह शोध परियोजना उत्तर प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (सीएसटी) की ओर से स्वीकृत की गई है। प्रो. वर्मा ने बताया कि परियोजना का मुख्य उद्देश्य एक किफायती बायो–सेंसर विकसित करना है, ताकि जांच की लागत को कम किया जा सके और आम लोगों तक यह सुविधा सुलभ रूप से पहुंच सके। शोध कार्य के दौरान सेंसर की कार्यक्षमता को विभिन्न जैविक नमूनों पर परखा जाएगा, जिससे इसे मेडिकल उपयोग के लिए उपयुक्त बनाया जा सके। एक जूनियर रिसर्च असिस्टेंट की होगी नियुक्ति इस परियोजना में अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने के लिए एक जूनियर रिसर्च असिस्टेंट (जेआरए) की नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। चयनित शोध सहायक को प्रति माह 25,000 से 28,000 रुपये तक मानदेय प्रदान किया जाएगा।

ई–रिक्शा चालक पहले देंगे प्रमाणपत्र, तभी मिलेगा ड्राइविंग लाइसेंस

प्रयागराज। अब ई–रिक्शा चालक को ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने से पहले 10 दिन का अनिवार्य प्रशिक्षण लेना होगा। शासन के निर्देश पर बमरौली में मां अम्बे मोटर ट्रेनिंग सेंटर के नाम से विशेष प्रशिक्षण केंद्र की शुरुआत की गई है, जहां से प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों को प्रमाणपत्र जारी किया जाएगा। यही प्रमाणपत्र ड्राइविंग लाइसेंस के लिए आवेदन करने की पहली शर्त है। परिवहन विभाग की ओर से जारी निर्देश में कहा गया है कि अब किसी भी ई–रिक्शा चालक को बिना मान्यता प्राप्त मोटर ट्रेनिंग स्कूल से प्रशिक्षण प्रमाणपत्र के लाइसेंस नहीं दिया जाएगा। इतना ही नहीं, प्रशिक्षण देने वाले स्कूल के संचालक को भी अभिलेखों के साथ एआरटीओ कार्यालय में उपस्थित होकर आवेदक के प्रमाणपत्र का सत्यापन कराना होगा। प्रयागराज में वर्तमान में 27 हजार से अधिक ई–रिक्शा चल रहे हैं। इनमें बड़ी संख्या ऐसे चालकों की है जो बिना लाइसेंस या किसी अन्य श्रेणी के लाइसेंस पर वाहन चला रहे हैं। कई नाबालिग चालक भी सड़कों पर ई–रिक्शा चलाते पाए गए हैं, जिससे यातायात व्यवस्था बिगड़ने और हादसों की शिकायतें लगातार बढ़ रही हैं।

लगातार बढ़ रही छुट्टा जानवरों की संख्या, फसलों को बचाना मुश्किल

प्रयागराज। जसरा प्रदेश सरकार के अथक प्रयास के बावजूद छुट्टा गोवंशों पर कोई नकेल नहीं लग पा रही है। जिसके चलते कृषि उपज पर प्रतिकूल प्रभाव तो पड़ ही रहा है, दूसरी ओर सड़कों पर दुर्घटनाओं में भी इजाफा हुआ है। विकास खंड जसरा में आवारा गोवंशों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। सड़कों से लेकर नवीन मंडी परिषद जसरा सहित क्षेत्र के प्रत्येक गांवों में हर जगह पर आवारा पशुओं को घूमते हुए एवं फसलों का नुकसान पहुंचाते हुए किसी भी समय देखा जा सकता है। दर्जनों के समूह में एकत्रित आवारा गोवंश गांव के जिस छोर पर पहुंच जाते हैं, सैकड़ों बीघा की फसल को चर कर व उसे रौंदकर नष्ट कर देते हैं।

हालांकि किसानों ने जानवरों से बचाव के लिए खेतों में बाड़ तक लगा रखा है। लेकिन बाड़ को फांदकर जानवर खेतों में घुस ही जाते हैं। दिन में तो जानवरों के ऊपर थोड़ा अंकुश लग जाता है, लेकिन रात के समय खेत के बगल सो रहे किसानों को धता बताकर उसको चरकर फसल को पूरी तरह चट कर जाते हैं।

आवारा गोवंशों के चलते अधिकांश किसानों ने दलहन, तिलहन एवं सब्जी की खेती अब नहीं कर पा रहे हैं। क्योंकि छुट्टा जानवर ज्यादातर अरहर, उर्द, मूंग, ज्वार, बाजरा, लौकी, बैगन, नेनुआ, तोरई, टमाटर, गोभी आदि फसलों को ज्यादा ही नुकसान पहुंचा रहे हैं। जसरा के इर्द–गिर्द दर्जनों गांवों अमरेहा, बुदांवा, गौहनिया, खटंगिया, चितौरी, दौना, मरुआ, तातारगंज, लेवदी, भीटा, मनकवार, पचखरा, सरसेड़ी, पांडर सहित कई गांवों में वर्षों पहले अधिकांश किसान सब्जी की खेती करते थे। अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार लेते थे। किंतु आवारा गोवंशों की बढ़ रही संख्या की बदौलत किसानों ने सब्जी की खेती करना बंद कर दिया है। जिससे पचास फ़ीसदी भूमि बिना बोए परती पड़ी रह जाती है। जिससे किसानों को भारी आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। कुछ जागरूक किसानों ने जानवरों को खेत तक न पहुंचने के लिए झटका मशीन का प्रयोग कर दिया है। किंतु जानवरों पर इस मशीन का भी कोई असर नहीं दिखाई पड़ता है। फसलों के चरने के बाद

जानवरों का जब पेट भर जाता है तो अधिकांश जानवर सड़कों पर आकर बैठ जाते हैं। जिसका प्रभाव आने जाने वाले छोटे बड़े वाहनों पर पड़ता है। प्रायरू इन जानवरों से दो पहिया एवं चार पहिया वाहन टकराकर न केवल क्षतिग्रस्त हो जाते हैं, बल्कि वाहनों पर बैठे लोग गंभीर दुर्घटनाओं के शिकार हो जाते हैं।

क्षेत्र के राष्ट्रीय राजमार्गों पर इन दिनों जो दुर्घटनाएं हो रही हैं, उसमें अस्सी फ़ीसदी दुर्घटना आवारा गोवंशों के बदौलत हो रही है। जानवरों के चलते हो रही दुर्घटनाओं में ज्यादातर लोग अपनी जान गंवा बैठते हैं। पिछले एक वर्ष में जसरा क्षेत्र में गोवंशों के चलते हुई दुर्घटनाओं में दर्जनों जाने जा चुकी हैं। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि शासन स्तर से विकास खंड के साथ गांवों में आवारा गोवंशों के लिए को गोआश्रय स्थल बनवाए गए हैं। लेकिन इन गोआश्रय स्थलों में पशुओं की संख्या न के बराबर है। बताया जाता है कि किसान आवारा गोवंशों को गोआश्रय स्थल तक छोड़कर अवश्य आते हैं, लेकिन गोआश्रय स्थल के संचालकों की लापरवाही के चलते आवारा पशु वहां से निकलकर पुनः बाहर आ जाते हैं। गौरतलब है कि अधिकांश आवारा गोवंश क्षेत्र की प्रमुख सड़कों पर बने रहते हैं। प्रयागराज–रीवा राष्ट्रीय राजमार्ग पर गौहनिया से जारी के बीच अनेक जगहों पर सैकड़ों गोवंशों को सड़क के मध्य में खड़ा या बैठा देखा जा सकता है।

इसी प्रकार प्रयागराज–बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग पर गौहनिया से लेकर लोहगरा के बीच आवारा गोवंशों को बहुतायत संख्या में देखा जा सकता है। क्षेत्र के प्रमुख बाजारों जैसे गौहनिया, जसरा, घूरपुर, बारा, जारी, लोहिया, शिवराजपुर आदि में सैकड़ों जानवर पूरे दिन सड़क पर ही इनको बैठे हुए देखा जा सकता है। बताते चलें कि विकास खंड जसरा में कुल पांच अस्थाई गोआश्रय स्थलों का निर्माण कराया गया है। जिसमें रेरा, कांटी, पांडर, गींज और देवरिया में गोशाला है। जिसमें कांटी में 218 गोवंश,रेला में 334, देवरिया में 240, पांडर में 315 और गींज गोआश्रय स्थल में 192 गोवंशों को रखा गया है। ज्यादातर गोआश्रय स्थल के एक भी गोवंश स्वस्थ नहीं हैं। उसका सबसे बड़ा कारण उनको मिलने वाली पौष्टिक आहार से है। किसी भी गोशाला में हरे चारे की ब्यवस्था नहीं है। सूखा भूसा भरा उन्हें कैसे स्वस्थ रख सकता है। जब कि विकास खंड के बाजार व गांवों में आवारा गोवंशों की बाढ़ सी बनी हुई है।

इतनी अधिक संख्या में आवारा जानवरों को कहां से लाया जा रहा है, यह एक यक्ष प्रश्न बना हुआ है। वहीं कुछ लोगों ने दबी जुबान पर नाम न छापने को लेकर बताया कि प्रयागराज में आवारा घूमने वाले गोवंशों को बड़े वाहनों में भरकर नगर निगम के कर्मचारी रात में जसरा व आस पास के इलाकों में छोड़ कर चले जा रहे हैं। जिसके कारण किसानों की मुसीबत बद से बद्तर बनी हुई है। वहीं बाजार व राष्ट्रीय राजमार्गों पर जानवरों के समूह को दिन ढलने के बाद आराम के साथ देखा जा सकता है। जो आए दिन सड़क पर चलने वाले लोगों को दुर्घटना का शिकार बना रहे हैं। कहीं न कहीं सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं पर पलीता तो नहीं लगाया जा रहा है। बोले जिम्मेदार अस्थाई गोआश्रय स्थलों में छमता के मुताबिक गोवंश संरक्षित हैं। उनका समय समय पर इलाज किया जा रहा है। कुछ किसान दूध खानेके बाद गायों को छोड़ दें रहे हैं। जिससे गोवंशों की संख्या बढ़ गई है। –डा एसबी सिंह, राजकीय पशु चिकित्साधिकारी, जसरा जसरा ब्लाक में कुल पांच स्थाई गोशाला हैं। जिसमें क्षमता से ज्यादा गोवंशों को रखा गया है। रेला गांव में एक स्थाई गोशाला का निर्माण लगभग पूर्ण होने वाला है। उसके बन जाने पर लगभग पांच सौ गोवंशों को रखा जाएगा। –सुनील कुमार सिंह, खंड विकास अधिकारी, जसरा

आवारा गोवंशों ने खेत खलिहान से लेकर गांवों में दरवाजे दरवाजे घूमते फिर रहे हैं। इससे खेती करना अब टेढ़ी खीर साबित होगा। किसानों के सामने खेती करना अब किसी मुसीबत से कम नहीं है। इस पर कहा बहुत कुछ गया लेकिन किया कुछ भी नहीं गया जिससे समस्या जस की तस बनी हुई है। –इन्द्र मणि यादव, किसान, कांटी आवारा गोवंशों के कारण आये दिन सड़क पर दुर्घटनाएं हो रही हैं। इसके चलते लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ रही है। सरकार को इस पर ठोस कदम उठाना चाहिए। हाईवे पर जानवर बेरोकटोक घूमते रहते हैं। आए दिन इन जानवरों से लोग टकरा कर घायल होते हैं लेकिन इस पर किसी का ध्यान नहीं है। –अनिल कुमार मिश्र, डायरेक्टर, डीसीबी प्रयागराज खेतों में अपनी फसलों को बचाने के लिए सारी रात रतजगा करने को किसान मजबूर हैं। उसके बावजूद भी फसल बचाना जानवरों से मुश्किल हो गया है। अच्छी खासी तैयार फसल की सुरक्षा हमेशा नहीं की जा सकती। जब किसानों की नजर चूकती है मवेशी अपना काम कर जाते हैं। –अरुण कुमार शुक्ल, किसान, अमरेहा आवारा गोवंशों के चलते लोग धीरे–धीरे खेती करना बन्द कर दें रहे हैं। जिससे इसका सीधा असर किसानों की कमाई पर पड़ रहा है। किसान पूरी तरह से परेशान है। किसान के पास खेती के अलावा कोई दूसरा विकल्प कमाई का नहीं होता ऐसे में जानवर यदि फसल चट कर जाएं तो वे कहीं के नहीं रह जाते। –रामानंद त्रिपाठी, पांडर

योगी सरकार ने गोवंशों के बचाव के लिए प्रत्येक विकास खंड में गोशालाओं का निर्माण कराकर एक मिशाल पेश किया था। बावजूद आवारा गोवंशों का झुंड बाजारों गांव गांव में देखने को मिल रहा है। बताया जा रहा है कि गोशालाओं से भी गोवंशों को चरने के लिए खोल दिया जाता है। –राम अभिलाष वर्मा, जसरा बाजार गांव से लेकर बाजार तक,खेत से लेकर खलिहान तक आवारा गोवंशों की भरमार लगी हुई है। किसान पूरी तरह से रतजगा करने को मजबूर हैं। बावजूद इसके वे अपनी फसल को बचा नहीं पा रहे हैं। इस पर कोई ठोस कार्ययोजना अभी तक नहीं बन सकी है। सरकार को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। –दिनेश त्रिपाठी, मुड़ेरा

एसआईआर में मालूम चलेगा कौन है वोटर, कौन नहीं

प्रयागराज। लोकसभा और विधान सभा चुनाव के लिए मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण(एसआईआर) करने के निर्देश के बाद अब जिले की मतदाताओं की सूची का पुनरीक्षण किया जाएगा। वर्ष 2003 की तर्ज पर एक बार फिर एसआईआर कराया जाएगा। अगर इन 22 वर्षों की बात की जाए तो जिले में 13 लाख 48 हजार 194 मतदाता बढ़ गए हैं। दरअसल वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव के लिए 2003 में मतदाता सूची तैयार हुई थी। उस वक्त वृहद और गहन पुनरीक्षण किया गया था। इसके बाद से वर्ष 2007, 2012, 2017 और 2022 में विधानसभा और वर्ष 2004, 2009, 2014, 2019 और 2024 में लोकसभा के समेत कुल नौ चुनाव हुए हो चुके हैं।

यह माना जा रहा है कि इस दौरान तमाम लोग सूची से बाहर हो गए होंगे और तमाम नए लोग आ चुके हैं। कई लोगों के पते में बदलाव हो चुका है। इस बार एकदम सटीक मतदाता सूची तैयार करने की कवायद हो रही है। जिससे किसी प्रकार का सवाल न उठ सके।

सहायक निर्वाचन अधिकारी फूलचंद्र ने बताया कि मैपिंग का काम किया जा रहा है। सात लाख पुरुष बढ़े तो छह लाख 45 हजार महिलाएं वर्ष 2003 में जिले की कुल 11 विधानसभा सीटों में पुरुष मतदाता 18 लाख 37 हजार 212 थे। जबकि वर्तमान सूची में इनकी संख्या 25 लाख 39 हजार 780 हो गई है। यानी 22 वर्षों में सात लाख दो हजार 658 पुरुष मतदाता बढ़ गए हैं, जबकि महिला मतदाता वर्ष

2003 में 15 लाख एक हजार 482 थीं, जो अब बढ़र 21 लाख 46 हजार 638 हो गई हैं। यानी 22 वर्ष में महिला मतदाता छह लाख 45 हजार 157 बढ़ गई हैं। नया जुड़ा है नाम तो देना होगा पहचान पत्र जिन लोगों का नाम वर्ष 2003 की मतदाता सूची में नहीं था और वर्तमान सूची में है, उन्हें अपना प्रमाणपत्र देना होगा। जबकि जिनका नाम दोनों सूची में है, उन्हें नाम नहीं देना होगा। जिनके माता पिता का नाम भी है, उन्हें भी प्रमाणपत्र देना होगा। कुल 10 पहचानपत्रों को सूची में रखा गया है। यह देने होंगे प्रमाणपत्र केंद्र, राज्य, सार्वजनिक उपक्रम के कर्मचारी, पेंशनभोगी को जारी पहचान पत्र, पेंशन प्रमाणपत्र। सक्षम प्राधिकारी की ओर से जारी जन्म प्रमाणपत्र। सरकार, स्थानीय प्राधिकरण, बैंक, डाकघर, एलआईसी, सार्वजनिक उपक्रम की ओर से 1.07.1987 के पहले जारी प्रमाणपत्र पासपोर्ट मान्यता प्राप्त बोर्ड, विश्वविद्यालय की ओर से जारी प्रमाणपत्र सक्षम प्राधिकारी की ओर से जारी स्थायी निवास प्रमाणपत्र वन अधिकारी का प्रमाणपत्र ओबीसी, एससी या एसटी को अधिकारी की ओर से जारी जाति प्रमाणपत्र राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर, जहां उपलब्ध हो राज्य, स्थानीय प्राधिकारी की ओर से जारी परिवार रजिस्टर की नकल विधानसभा क्षेत्रों में आया है बदलाव वर्ष 2003 में जिले में कुल 11 विधानसभा सीटें थीं, जिसमें मेजा, करछना, बारा, झूंसी, हंडिया, प्रतापपुर, सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी और पश्चिमी सीटें शामिल थीं। बीते 22 वर्षों में परिसीमन बदला और कुछ विधानसभा क्षेत्र बदले और एक नया क्षेत्र बन गया। अब कुल 12 विधानसभा सीटें हैं, जिसमें झूंसी अब प्रतापपुर में शामिल हो गया। नवाबगंज अब फाफामऊ में शामिल हो गया जो अब 12वीं विधानसभा सीट भी है। मतदाता सूची 2003 विधानसभा क्रमांक विधानसभा क्षेत्र पुरुष मतदाता महिला मतदाता कुल मतदाता 252 करछना 164796 135616 300412 253 बारा 152987 128661 281648 254 झूंसी 149217 121673 270890 251 मेजा 169007 145339 314346 261 इलाहाबाद पश्चिमी 206380 166589 372969 259 इलाहाबाद उत्तर 218616 158961 377577 260 इलाहाबाद दक्षिण 157962 125218 283180 255 हंडिया 167448 139211 306659 256 प्रतापपुर 151084 129031 280115 257 सोरांव 147810 125906 274616 258 नवाबगंज 151005 125276 276281

कुल ———— 1837212 1501481 3338693 मतदाता सूची 2025 क्रम सं. विधानसभा पुरुष मतदाता महिला मतदाता थर्ड जेंडर कुल मतदाता 254 फाफामऊ 198071 167648 13 365732 255 सोरांव 203395 175545 35 378975 256 फूलपुर 225251 185689 58 410998 257 प्रतापपुर 221805 185698 34 410527 258 हंडिया 218814 186184 46 405044 259 मेजा 183781 150812 18 334611 260 करछना 198109 167977 50 366136 261 इलाहाबाद पश्चिम 253008 213388 11 466357 262 इलाहाबाद उत्तर 233879 194619 45 428543 263 इलाहाबाद दक्षिण 224592 189968 126 414686 264 बारा 185288 159989 11 345288 265 कोरांव 193878 166181 22 359992 कुल 2539780 2146638 469 4686887

रज्जू भय्या विवि में अंतर्महाविद्यालयीय कराटे प्रतियोगिता

प्रयागराज। प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज के खेल विभाग के तत्वावधान में अंतर महाविद्यालय कराटे प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 30 प्रतिभागियों ने विभिन्न भार वर्गों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। पुरुष वर्ग (Men*s Category): 50 किग्रा वर्गरू सुजीत यादव (स्वर्ण पदक), शिवम शर्मा (रजत पदक) 55 किग्रा वर्गरू सुमित विश्वकर्मा (स्वर्ण), दुर्गेश यादव (रजत), रामबली (कांस्य) 60 किग्रा वर्गरू बादल यादव (स्वर्ण), गगन भारती (रजत) 68 किग्रा वर्गरू अर्जित (स्वर्ण), मंगल यादव (रजत), अजीमुद्दीन (कांस्य) महिला वर्ग (वउमदे ब्जमहवतल)रू 45 किग्रा वर्गरू सौम्या कुशवाहा (स्वर्ण), काजल कुमारी (रजत) 50 किग्रा वर्गरू लक्ष्मी यादव (स्वर्ण), त्रिशा गुप्ता (रजत) 55 किग्रा वर्गरू पूनम सिंह (स्वर्ण), आस्था रावत (रजत), महीमा श्रीवास्तव (कांस्य) 61 किग्रा वर्गरू श्रृष्टि

दुबे (स्वर्ण) 68+ किग्रा वर्गरू एंजल दुबे (स्वर्ण) प्रतियोगिता का संचालन विश्वविद्यालय के प्रशिक्षकों कृ श्री धर्मेन्द्र यादव(कोच), श्री राजू पाल(कोच), श्री प्रशांत कुमार(कोच) एवं श्री शिवकांत मिश्र(कोच) द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने विजेता एवं प्रतिभागी खिलाड़ियों को शुभकामनाएँ दीं तथा कहा कि खेल न केवल शारीरिक दक्षता का माध्यम हैं, बल्कि अनुशासन, नेतृत्व एवं टीम भावना को भी प्रोत्साहित करते हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रो. विनीता यादव ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय खेल एवं सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रो. भास्कर शुक्ल, खेल सचिव, ने प्रतियोगिता के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले प्रशिक्षकों एवं आयोजन समिति के सभी सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया।प्रतियोगिता का संचालन विश्वविद्यालय खेल विभाग के सौजन्य से किया गया और कार्यक्रम का समापन विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण के साथ हुआ।

मालगाड़ियों के ट्रैक पर दौड़ेंगी यात्री ट्रेनें

प्रयागराज। रेलवे इतिहास में मंगलवार को एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। मालगाड़ियों के लिए बनाए गए ईस्टर्न डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (ईडीएफसी) पर पहली बार यात्री ट्रेनें दौड़ेंगी। छठ पर्व के बाद बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश से लौटने वाली भीड़ को देखते हुए रेलवे ने यह फैसला लिया है। रेलवे ने प्रारंभिक चरण में छह छठ स्पेशल ट्रेनों को फ्रेट कॉरिडोर के रास्ते चलाने की तैयारी की है। इनमें से दो ट्रेन 03641 गया शकूर बस्ती (दिल्ली) और 03263 दानापुर शकूर बस्ती (दिल्ली) का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। ये ट्रेनें प्रयागराज मंडल के चुनार से फ्रेट कॉरिडोर में प्रवेश करेंगी और दादरी तक इसी मार्ग से चलेंगी। इसके बाद चिपियाना बुजुर्ग के पास वे मुख्य दिल्लीदृहावड़ा रेलमार्ग में दोबारा शामिल हो जाएंगी।

मुआवजा पर एक माह में निर्णय लेने का निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने महाकुम्भ मेला अधिकारी को प्रयागराज में महाकुम्भ 2025 में मौनी अमावस्या स्नान पर्व पर हुई भगदड़ में जान गंवाने वाली मां और बेटी को प्रदेश सरकार द्वारा घोषित मुआवजे के भुगतान के संबंध में मृतक के पति के प्रत्यावेदन को एक माह के भीतर निस्तारित करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अजित कुमार एवं न्यायमूर्ति स्वरूपमा चतुर्वेदी की खंडपीठ ने बलिया के नसीराबाद गांव निवासी दिनेश पटेल की याचिका पर उसके अधिवक्ता राजवेंद्र सिंह, प्रकाश एवं सईद और सरकारी वकील को सुनकर दिया है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2025 का शुभारम्भ

प्रयागराज। केंद्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन, प्रयागराज में दिनांक 27.10.2025 से 02.11.2025 तक चलने वाले सतर्कता जागरूकता सप्ताह का शुभारम्भ किया गया । इस कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/कोर, डॉ एस.एस. नेगी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं सरदार वल्लभभाई पटेल जी के चित्र पर

माल्यापर्पण के साथ हुआ। सतर्कता जागरूकता सप्ताह प्रतिवर्ष भारत के प्रथम गृह मंत्री श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिन के शुभ अवसर पर मनाया जाता है। इस अवसर पर संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सत्यनिष्ठा शपथ ली गई। सप्ताहांत में समापन समारोह के दौरान महाप्रबंधक/कोर की अध्यक्षता में सभी प्रमुख विभागध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारियों के साथ संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा तथा इस उपलक्ष्य में आयोजित वाक, निबंध, क्विज एवं रेल कर्मचारियों के बच्चों के लिए ड्रॉइंग प्रतियोगिताओं के विजेताओं को महाप्रबंधक /कोर द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।

मोरना चीनी मिल के विस्तारीकरण को लेकर सीएम से मिले जिला पंचायत अध्यक्ष

मोरना। गन्ना फ़सल की कटाई शुरू होते ही मोरना चीनी मिल के विस्तारीकरण की मांग फिर शुरू हो गयी है। इसी संबंध मे जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. वीरपाल निर्वाल ने प्रदेश के मुख्य मन्त्री योगी आदित्यनाथ से भेंटकर मिल की पैराई क्षमता बढ़ाने की मांग दौराई है। जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. वीरपाल निर्वाल ने बताया कि बीते शनिवार को लखनऊ स्थित सीएम कार्यालय पर जाकर उन्होंने प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंट की।जहां उन्होंने मोरना स्थित दि गंगा किसान सहकारी चीनी

मिल के विस्तारीकरण की पुरानी मांग को रखा है।डॉ.निर्वाल ने मुख्य मंत्री को बताया कि मोरना चीनी मिल की पेराई क्षमता क्षेत्र में गन्ना उपज के उत्पादन के सापेक्ष पर्याप्त नहीं है तथा यह इकाई पुरानी भी हो चुकी है। चीनी मिल की पेराई क्षमता 25 टी सी डी से बढ़ाकर 50 टी सी डी करते हुए नई यूनिट का निर्माण कराया जाये। मोरना चीनी मिल का नवीनीकरण एवं विस्तारीकरण इस क्षेत्र के किसानों की सबसे बड़ी मांग है और गन्ना किसानों के हित में मिल का विस्तारीकरण किया जाना बेहद जरूरी है। जिला पंचायत अध्यक्ष डा वीरपाल निर्वाल इससे पूर्व भी कई बार प्रदेश के मुख्य मंत्री से मिल कर यह मांग कर चुके हैं ।मुख्य मंत्री ने इस विषय को गंभीरता से लेते हुए शीघ्र निर्णय लेने का आश्वासन दिया है।मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ ने शुकतीर्थ के विकास सहित जनपद मे विकास योजनाओ के उचित क्रियान्वयन के संबंध मे जिला पंचायत अध्यक्ष से बात की।

सादर शिवहिं नाइ अब माथा,बरनउं विषद राम गुनगाथारू स्वामी विनोदानन्द जी

जमुनापार के युवा लोक कलाकारों ने महोत्सव मंच पर बांधी समां

करछना/ क्षेत्र के रामपुर स्थित बृज मंगल सिंह इंटर कॉलेज में चल रहे 27 वें जमुना पार महोत्सव में आयोजित सात दिवसीय राम कथा के दौरान व्यास पीठ पर विराजमान कथा वाचक स्वामी विनोदानन्द जी महाराज ने मानस के विविध प्रसंगों की राम कथा का रसपान कराते हुए श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। सादर शिवहिं नाई अब माथा, बरनउं विषद राम गुन गाथा, से कथा का आरंभ कर स्वामी जी ने,एक राम अवधेश कुमारा, के साथ–साथ भगवान के बाल स्वरूप,युवा स्वरूप और लोकाभिराम राम तक की

मार्मिक कथा का वर्णन करते हुए सभी को आहलादित किया। इसके पूर्व पहले सत्र में मंच पर जमुनापार के युवा लोक कलाकारों ने पारंपरिक लोकगीतों की प्रस्तुतियों से खूब समा बांधी। रेनू रोशनी, सत्यवान कुमार,कृष्ण कुमार सत्यार्थी,राम सुचित गोलू,दीपेश कुमार,बबलू दीवाना,मोनू मस्ताना,अजय यादव,राजेश यादव सभा भाई,दिलीप चौधरी,चंद्रभान प्रजापति, विभव शंकर,सनी विश्वकर्मा समेत कई लोक कलाकारों ने मल्लहिया,जनेऊ गीत,विवाह गीत,सोहर,धोबिया गीत सहित कई गीतों की प्रस्तुतियों पर खूब तालियां बटोरी। लोक कलाकारों को मिशन के संयोजक डॉ. भगवत पांडेय, वरिष्ठ लोक गायक श्यामलाल बेगाना,रामबाबू यादव ने मंच पर सम्मानित किया। कमला शंकर त्रिपाठी ने सभी के प्रति स्वागत आभार प्रकट किया।संचालन डॉ. केके त्रिपाठी ने किया। इस मौके पर योगेन्द्र शुक्ल, ज्ञानेश्वर शुक्ल,वेद श्रीवास्तव,सुरेश कुमार,विश्वेश ओझा,कंचन पांडेय,कन्हैया लाल,रमेश तिवारी,जितेंद्र जलज,राजू तिवारी,सुनील प्रजापति, उमाकांत दूबे,राजकुमार विश्वकर्मा,विमला देवी, जितेंद्र कुमार सहित बड़ी संख्या में श्रोता भक्तजन मौजूद रहे।

सूर्य को अर्घ्य देकर व्रतधारी ने चार दिवसीय लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा धूमधाम से संपन्न किया

व्रतियों ने एक दूसरे व्रतियों को माथे पर सौभाग्य सिंदूर लगाकर अपना पारण किया, श्रद्धालुओं का छठ घाटों पर भीड़ उमड़ी

विश्वनाथ, असम। देश के अन्य हिस्सों की तरह विश्वनाथ जिले में सूर्योपासना व आस्था का महापर्व छठ पूजा का आज प्रातः कालीन भास्कर को अर्घ्य देकर व्रतधारी ने चार दिवसीय छठ पूजा संपन्न की ।साथ ही व्रतियों ने पारण कर 36 घंटा निर्जला व्रत का खंडन किया । प्रातः तीन बजे व्रतधारी घाट पहुँच कर छठ मईया की उपासना एवं उदय भास्कर को अर्घ्य देने के लिए पूजा अर्चना की। छठ घाट में व्रतियों ने कोसी भरने की परंपरा की छटा बिखेरी। विश्वनाथ चारिआलि के आमबाड़ी में स्थित केंद्रीय श्री श्री छठ पूजा समिति के पंडाल में श्रद्धालुओं का तॉता लगा रहा है । इस घाट में प्रायः तीन सौ से अधिक व्रतधारी ने छठ पूजा करके उगते हुए आदित्य को विभिन्न ऋतु फलों, ठेकुआ, मिष्ठान से सजे सूप व टोकरी से अर्घ्य देकर भास्कर को दूध अर्पित किया। इसके बाद व्रतधारी महिला ने एक दूसरे व्रतधारी महिला के मस्तक पर सौभाग्य सिंदूर लगाकर छठी मइया से खुशहाली की कामना की। अंत व्रतधारी गृह पहुंचकर विधिवत पूजन कर पारण किया।इस घाट में व्रतधारी के होठों से पारंपरिक मधुर छठ मईया को गुनगुनाते हुए देखा गया। इधर सनातन धर्म का सबसे बड़ा छठ महापर्व में विश्वनाथ चारिआलि शहर के आमबाड़ी में स्थित केंद्रीय श्री श्री छठ पूजा समिति ने व्रतधारियों के लिए छठ मइया पूजन का भव्य आयोजन भी किया। जिसमें छठी मइया की गुंजित गान से परिवेश भक्तिमय हो उठा । उल्लेखनीय है कि कल इस मौके आयोजित सभा में विशिष्ट अतिथि के रूप में विश्वनाथ

विधायक प्रमोद बरठाकुर, विश्वनाथ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० चिंतामणि शर्मा , वरिष्ठ समाजसेवक हरिप्रसाद ठाकुर , राष्ट्रीय विद्यालय एम ई के प्रधान शिक्षक रामचंद्र ठाकुर और विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी उपस्थित थे। जिन्हें असमीया फूलाम गामोछा से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ शिक्षक तथा सलाहकार सूर्य नारायण पाण्डेय ने की। तत्पश्चात् विशिष्ट अतिथियों ने प्रसिद्ध तथा हृदयस्पर्शी गायक जुबिन गर्ग के फोटो के समीप दीप प्रज्वलित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। व्रतधारी ने भगवान भास्कर तथा छठी मइया से सभी के जीवन में ऊर्जा, समृद्धि और आनंद का प्रकाश की कामना की। इस मौके पर समाजसेवक राजु प्रसाद, नागेश कुमार गुप्ता, शिक्षक सत्यप्रकाश गुप्ता, संतोष कुमार महतो, इंद्रजीत गुप्ता, अजय कुमार प्रसाद , अरुण साहनी , सुरेंद्र कुमार सहनी और गणमान्य नागरिक मौजूद थे। विश्वनाथ के पश्चिम छठ घाट फलफली में असंख्य व्रतधारी ने उगते हुए सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर देश के मंगलमय की कामना की।जानकारी के अनुसार विश्वनाथ विधानसभा क्षेत्र में प्रायः 22 छठ घाट में आस्था का महापर्व छठ पूजा की रौनक छाई रही।

न्यायमूर्ति सुधीर नारायण ने प्रदर्शनी के कला आचार्यों को किया सम्मानित

न्यायमूर्ति सुधीर नारायण ने कला आचार्य प्रदर्शनी संचरण के कैटलॉग का किया लोकार्पण

प्रयागराज। राज्य ललित कला अकादमी उ० प्र० एवं उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित तीन–दिवसीय कला आचार्य प्रदर्शनी संचरण का भव्य समापन समारोह संपन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि वाश शैली के मूर्धन्य कलाकार माननीय न्यायमूर्ति सुधीर नारायण ने प्रदर्शनी के कैटलॉग का लोकार्पण किया एवं सभी कला आचार्यों को कैटलॉग एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया। सर्वप्रथम कला आचार्य प्रदर्शनी के संयोजक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर विख्यात कलाकार सचिन सैनी एवं प्रदर्शनी के संरक्षक प्रख्यात कलाकार राज्य ललित कला अकादमी के सदस्य रवीन्द्र कुशवाहा ने मुख्य अतिथि को अंगवस्त्र पुष्पगुच्छ और माल्यार्पण से सम्मानित किया। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति ने कला प्रदर्शनी की सराहना करते हुए कहा कि किया कला आचार्य प्रदर्शनी कला विद्यार्थियों के लिए अमृत सृजन का कार्य करेगी और नए कलाकारों के सृजन शक्ति का संवर्धन करेगीं, प्रदर्शनी की सभी

कलाकृतियां शानदार हैंऔर कहा प्रदर्शनी के भव्य संयोजन के लिए डॉ सचिन सैनी एवं संरक्षक रवीन्द्र कुशवाहा बधाई के पात्र हैं उन्होंने प्रयागराज में कला का अलख जगाया है सांस्कृतिक केंद्र एवं ललित कला अकादमी ने आचार्य प्रदर्शनी आयोजित करके देश को एक कलात्मक नई दिशा व दशा प्रदान की है। अयोध्या में भगवान राम की मूर्ति का स्केच बनाने वाले विश्व–विख्यात कलाकार राज्य ललित कला अकादमी के अध्यक्ष डॉ सुनील विश्वकर्मा एवं अकादमी के सदस्य सुविख्यात कलाकार डॉ सुनील सिंह कुशवाहा ने प्रदर्शनी की प्रशंसा करते हुए कला आचार्यों का मार्गदर्शन भी किया, प्रदर्शनी का में इन दोनों महान कलाकारों का भव्य स्वागत अभिनंदन हुआ। इस शुभ अवसर पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विधि संकाय के डीन प्रोफेसर आदेश कुमार, सांस्कृतिक केंद्र की सलाहकार कल्पना सहाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर सौमिक नन्दी, वरिष्ठ कलाकार नागेन्द्र श्रीवास्तव, कलाकार आशुतोष त्रिपाठी, नीरज हिंदुस्तानी, बबिता मौर्य इत्यादि कलाकारों ने प्रदर्शनी की जमकर तारीफ की। लगभग सभी कला आचार्य समापन समारोह में मौजूद रहे। धन्यवाद ज्ञापन प्रदर्शनी संरक्षक कलाकार रवीन्द्र कुशवाहा ने किया।

मोरना चीनी मिल मे सांसद चंदन चौहान का किसानों ने किया घेराव

मोरना। चीनी मिल मोरना के विस्तारी करण सहित क्षेत्र की समस्याओं को लेकर गुस्साए किसानो ने बिजनौर सांसद चंदन को रास्ते मे रोककर घेराव किया व जमकर नारेबाजी की गयी। किसानो व ग्रामीणों ने सांसद से नाराजगी जताते हुए मिल के शीघ्र विस्तारीकरण का वादा पूरा करने,टूटे पड़े मार्गो का निर्माण कराने,क्षेत्र के विकास तथा आमजन की अनेक समस्याओं को दूर कराने की मांग की। असहज हुए सांसद ने सभी समस्याओं के शीघ्र निवारण करने का भरोसा दिलाया है। मोरना–भोपा मार्ग पर चीनी मिल मोरना पर भारी संख्या मे इकट्ठा हुए किसानो व ग्रामीणों ने बिजनौर जा रहे सांसद चंदन चौहान को रोककर घेराव किया। क्षेत्र के किसानो ने भारी नाराजगी जताते हुए सांसद से कहा की मोरना चीनी मिल के विस्तारीकरण के मुद्दे पर क्षेत्रवासियो ने उन्हें मीरांपुर से विधायक बनाया था। जिसके बाद क्षेत्र की जनता ने उन्हें बिजनौर से सांसद बनाकर संसद मे भेजा है। किन्तु मोरना चीनी मिल के विस्तारिकरण को वह भूल गये। ग्रामीणों ने पांच वर्षों से अधूरे पड़े मोरना –भोपा– –मुज़फ्फरनगर मार्ग का अभी तक निर्माण न होने, क्षेत्र मे रोजगार परक उद्योग की स्थापना न होने, क्षेत्र मे आकर व्यक्तियों की समस्याओं को सुनने की मांग की। वहीं भाजपा नेता अमित राठी ने बताया की मोरना चीनी मिल के विस्तारिकरण करने का आश्वासन क्षेत्र के जनप्रतिनिधि देते रहे हैं। अब

जनता को केवल वादों से नहीं बहलाया नहीं जा सकता है। धरातल पर कार्य करना होगा। मिल के विस्तारिकरण मे एक बड़ी राशि खर्च होनी है। जिसके लिए सार्थक प्रयास की आवश्यकता है।अन्यथा जनप्रतिनिधियों को इसके परिणाम उलट भुगतने होंगे। सांसद चंदन चौहान ने कहा की क्षेत्र की जनता ने उन्हें समर्थन व बहुत सम्मान दिया है। उनकी नाराजगी को वह स्वीकार करेंगे। मोरना चीनी मिल के विस्तारिकरण की मांग उन्होंने विधायक रहते विधानसभा मे उठाई थी। अभी भी वह लगातार प्रयास मे जुटे हुए हैं।275 करोड़ की लागत से मोरना चीनी मिल का विस्तारिकरण कार्य प्रदेश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व जयंत चौधरी के प्रयासों से शीघ्र किया जायेगा।क्षेत्र मे सबसे अधिक मार्गो को उनके द्वारा पक्का कराया गया है। किन्तु टोल बचाने को लेकर भारी वाहन क्षेत्र से गुज़रते हैं।जिससे मार्ग टूट जाते हैं। क्षेत्र के विकास को लेकर वह प्रतिबद्ध हैं। साथ ही मिल के प्रधान प्रबंधक वी पी पाण्डेय से मिल के विस्तारिकरण के संबंध मे तकनीकी जानकारी ली गयी। वहीं आउट सोर्सिंग कर्मचारियों ने सांसद से अपनी समस्या से अवगत कराया व उनके समाधान कराने की मांग की।

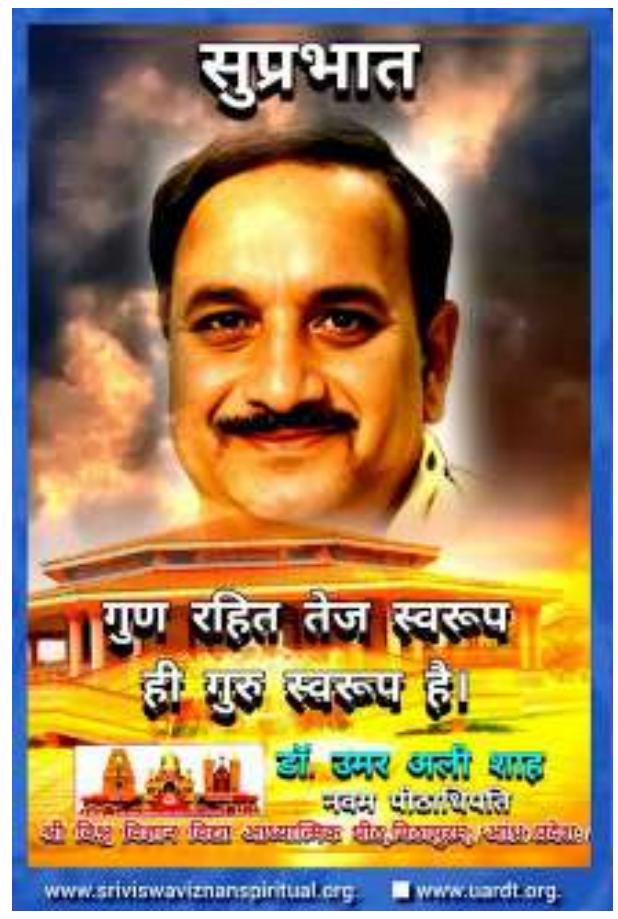

कनेर के फूल

(कुण्डलिया)

'कणलिंगे' कन्नड़ कहें अरु गुजरात 'कन्हेर'।
कहें मराठी 'तांडवी', औ' पंजाब 'कनेर'।
औ' पंजाब कनेर, फूल हैं जिसके सुन्दर।
मोहकता के साथ, ज़हर रहता है अन्दर।
सुन लो कहें प्रदीप, न चखते स्वाद पतिंगे।
शिव की बने पसन्द, फूल कहते 'कणलिंगे'।।

आयुर्वेदिक ग्रन्थ में, वर्णित फूल कनेर।
विष का पूरा खान है, चखते करता ढेर।
चखते करता ढेर, पत्तियाँ प्यारी–प्यारी।
कोमल जिसकी शाख, सदा सबको भरमाती।
सुन लो कहें प्रदीप, बात है अति प्रासंगिक।
कहते हैं सब वैद्य, दवा है आयुर्वेदिक।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

एस०डी० कॉलेज ऑफ कॉमर्स में हुआ अन्तरमहाविद्यालय क्रॉस कंट्री (पुरूष एवं महिला) चैम्पियनशिप का आयोजन

मुजफ्फरनगर। एस0 डी0 कॉलेज ऑफ कॉमर्स, मुजफ्फरनगर के खेल मैदान पर माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर की एक दिवसीय अर्न्तमहाविद्यालय क्रॉस कंट्री (पुरूष एवं महिला) चौम्पियनशिप 2025–26 का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय पर्यवेक्षक डा0 सोनाली नेगी, असिस्टेंट प्रोफेसर (जैन कन्या पी0जी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर) महाविद्यालय प्राचार्य डा0 सचिन गोयल, डीन डा0 नवनीत वर्मा, क्रीडाधिकारी अंकित

धामा ने प्रतिभागियों को हरी झण्डी दिखाकर प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया। विश्वविद्यालय पर्यवेक्षक डा0 सोनाली नेगी ने कहा कि खेलों से जुडा इतना भव्य आयोजन मुजफ्फरनगर जिले के लिये सौभाग्य की बात है व उन्होने उपस्थित सभी महाविद्यालयों के शिक्षकों व प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए प्रतियोगिता के शुभारम्भ की उद्घोषणा की। स्पोर्टस ऑफिसर अंकित धामा ने बताया कि टूर्नामेंट में दोनो वर्गो की 13 टीमों ने प्रतिभाग किया जिनमें एम0 एस0 कॉलेज सहारनपुर, एस0डी0 कॉलेज ऑफ कॉमर्स मुजफ्फरनगर, श्रीराम कॉलेज मुजफ्फरनगर, एस0 वी0 एम0 योगा मुजफ्फरनगर, राजकीय महिला कॉलेज कांधला, महाराणा प्रताप कॉलेज सहारनपुर, गोचर महाविद्यालय रामपुर मनिहारन, आई0 आई0 एम0 टी0 कॉलेज सहारनपुर, चौधरी आशाराम त्यागी कॉलेज सहारनपुर, एस0 डी0 पी0 जी0 कॉलेज मुजफ्फरनगर के खिलाडियों ने प्रतिभाग किया।

चोरो ने करहेड़ा स्वास्थ्य उपकेंद्र से कीमती सामान को चुराया

मोरना। मोरना के निकटवर्ती गांव करहेड़ा में तिस्सा मार्ग पर स्थित स्वास्थ्य उपकेंद्र में चोरो ने चोरी की घटना को अंजाम देकर सनसनी फैला दी है। उपकेन्द्र पर तैनात आशाओं ने पुलिस को सूचना देकर अज्ञात चोर के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। भोपा थाना क्षेत्र के गांव करहेड़ा की आशा कार्यकत्री रीना ने जानकारी देते हुए बताया की सोमवार की रात चोरों ने स्वास्थ्य के ंद्र से 17 कुर्सियां, दो मेज, दो वेट मशीन,डिलीवरी के उपकरण,

सफाई का सामान चोरी कर लिया चोरों ने कुछ दिन पूर्व सबमर्सिबल का तार व स्टार्ट भी चोरी कर लिया था चोरी की घटना का मंगलवार की सुबह पता चला जब सफाई कर्मी को उपकेंद्र के ताले टूटे हुए मिले सफाई कर्मी ने घटना की सूचना ग्रामप्रधान अमित राठी को दी स्वास्थ्य उप केंद्र पर चोरी की घटना से गांव में हड़कंप मच गया मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना की जानकारी की। थाना प्रभारी निरीक्षक जसवीर सिंह ने बताया कि घटना की जांच कर जल्द खुलासा किया जाएगा।

सम्पादकीय.....

पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच कितनी देर टिकेगा युद्धविराम

आखिरकार गत दिनों अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच एक सप्ताह तक चले युद्ध का कतर और तुर्की के हस्तक्षेप से अंत हो गया। अफगानिस्तान में 2021 में तालिबान के सत्ता में आने के बाद से दोनों देशों के बीच यह अब तक का सबसे भयावह युद्ध था। इसमें पाकिस्तान के हमलों व अफगानिस्तान द्वारा पाकिस्तान पर जवाबी हमले से दर्जनों लोगों की मौत हुई। अफगानिस्तान के अनुसार पाकिस्तान के हमलों से 3 क्रिकेट खिलाडियों सहित उसकी सिविलियन आबादी मरी है जबकि इस्लामाबाद का कहना है कि उसने केवल आतंकियों को निशाना बनाया। पाकिस्तान के लिहाज से दोनों देशों में युद्ध विराम की खुशी जल्दी ही खत्म हो गई जब कतर सरकार ने संभवतः तालिबान के दबाव के अधीन अपने पहले बयान को बदल कर अफगानिस्तान–पाकिस्तान सीमा पर तनाव समाप्त करने संबंधी उल्लेख हटा कर पाकिस्तान को उलझन में डाल दिया। हालांकि फिलहाल अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान में युद्ध विराम हो गया है, परंतु दोनों देशों में अभी भी पश्तून समस्या तथा डूरंड लाइन जैसे मुद्दे फंसे हुए हैं। डूरंड लाइन अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच लगभग 2640 किलोमीटर लम्बी सीमा है जो 1893 में ब्रिटिश भारत और अफगानिस्तान के बीच स्थापित की गई थी। इसका नाम ब्रिटिश भारत के तत्कालीन विदेश सचिव 'सर हैनरी मोर्टिमर डूरंड' के नाम पर रखा गया था। इसका पश्चिमी छोर ईरान सीमा से तथा पूर्वी छोर चीनी सीमा से मिलता है। यह अफगानिस्तान की आपत्तियों के कारण 1947 में पाकिस्तान के अस्तित्व में आने के बाद से दोनों देशों के बीच संघर्ष का महत्वपूर्ण कारण बनी हुई है। पाकिस्तान तो इसे स्वीकार करता है परंतु अफगानिस्तान के शासकों का कहना है कि वे तो इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे। हाल ही में अफगानिस्तान में सत्तारूढ़ तालिबान के रक्षा मंत्री मुल्ला याकूब के डूरंड लाइन को लेकर दिए एक बयान ने इस मुद्दे को फिर से गर्मा दिया है। अतरू हो सकता है कि इसे लेकर दोनों देश आपस में फिर उलझ जाएं। आजकल पाकिस्तान अपना कूटनीतिक झंडा हर जगह गाड़ रहा है, परंतु इसके सर्वाधिक करीबी अफगानिस्तान के साथ पाकिस्तान की शायद न बने क्योंकि अफगानिस्तान का कहना है कि पख्तून वाला आधा इलाका उसका है जो पाकिस्तान कभी भी अफगानिस्तान को देना स्वीकार नहीं करेगा। पाकिस्तान तथा अफगान तालिबान के बीच डूरंड लाइन तथा पश्तून समस्या के निपटारे बिना स्थायी शांति का स्थापित होना असंभव ही दिखाई देता है।

आसियान में मोदी की गैरहाजिरी

डॉ. दीपक पाचपोर

प्रधानमंत्री का काम छोड़कर बीजेपी के लिए चुनाव प्रचार करने का काम मोदी पहले भी करते रहे हैं। बहरहाल, आसियान जैसे मंच क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए जरूरी होते हैं।

दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों के संगठन, आसियान का शिखर सम्मेलन मलेशिया में होने जा रहा है। जिसमें इस बार भारत की तरफ से प्रधानमंत्री मोदी शामिल नहीं हो रहे हैं, उनका प्रतिनिधि बनकर एस जयशंकर पहुंच रहे हैं। श्री मोदी की गैरहाजिरी को लेकर कोई ठोस कारण अब तक सामने नहीं आया है कि फलां–फलां वजह से मलेशिया पहुंचना बिल्कुल ही असंभव था। हालांकि कांग्रेस पार्टी का कहना है कि ट्रंप से आमना–सामना न हो, इससे बचने के लिए नरेन्द्र मोदी आसियान में नहीं गए। वहीं हो सकता है कि बिहार चुनाव की व्यस्तता भी मोदी को देश के लिए जरूरी कामों से दूर कर रही है। प्रधानमंत्री का काम छोड़कर बीजेपी के लिए चुनाव प्रचार करने का काम मोदी पहले भी करते रहे हैं। बहरहाल, आसियान जैसे मंच क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए जरूरी होते हैं। मोदी बार–बार भारत को विश्वगुरु बनाने की बात करते हैं, लेकिन सोचने वाली बात है कि क्या इस तरह भारत का रसूख कायम होगा। विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्ष जब आपस में मिलते हैं तो जरूरी मुद्दों पर चर्चा होती है, कई ऐसे समझौतों की राह बनती है, जो फोन पर चर्चाओं में संभव नहीं है। अमेरिका से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी मलेशिया पहुंचे हैं और रास्ते में वो कतर होते हुए आए। दुनिया के दूसरे कोने से ट्रंप बार–बार एशिया का रुख कर रहे हैं, क्योंकि यहां उन्हें व्यापारिक, राजनैतिक, सामरिक लाभ नजर आ रहे हैं। रविवार सुबह ट्रंप रविवार सुबह मलेशिया के दौरे पर पहुंचे और कुआलालंपुर में उनकी मौजूदगी में थाईलैंड और कम्बोडिया ने सैन्य संघर्ष को खत्म करने के लिए शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। ट्रंप ने कहा कि जिसे लोग असंभव मान रहे थे, उसे उन्होंने संभव कर दिखाया है। गौरतलब है कि थाईलैंड और कम्बोडिया के बीच एक मंदिर विवाद को लेकर 5 दिनों तक जंग चली थी, जिसमें 48 लोगों की मौत हुई थी। इसे खत्म करने में ट्रंप की अहम भूमिका बताई जा रही है। ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में रणनीतिक तौर पर खुद को शांतिदूत साबित करने में लगे हुए हैं। भारत–पाकिस्तान के बीच भी युद्ध रुकवाने का दावा कम से कम 50 बार तो कर ही चुके हैं, जिसे मोदी ने गलत साबित करने की पुख्ता कोशिश एक बार भी नहीं की। उधर रूस से तेल खरीद को रोकने के लिए भी ट्रंप भारत पर दबाव बनाने की बात कह रहे हैं। मोदी इसे भी नकार नहीं रहे। ऐसा नहीं है कि ट्रंप बड़ी नेकनीयत से ये सारे काम कर रहे हैं। शांति का उनका विचार गांधी और नेहरू के विचारों से दूर–दूर तक मेल नहीं खाता है। ट्रंप दबाव की राजनीति में यकीन रखते हैं और दुनिया पर वही थोप रहे हैं। अगर भारत की मौजूदा सरकार गांधीवादी सिद्धांतों और नेहरूवादी रणनीति के साथ बढ़ती तो ट्रंप की हिम्मत नहीं होती कि वो इतनी बेतकल्लुफी के साथ भारत के प्रधानमंत्री के लिए बयान देते। लेकिन अभी की शर्मनाक हकीकत यही है। ट्रंप शांतिदूत वाले चोगे को पहनकर बड़ी चतुराई से भारत को अलग–थलग कर रहे हैं। पाकिस्तान पूरी तरह से ट्रंप की सरपरस्ती में है, अब मलेशिया में ट्रंप की मुलाकात चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से होने वाली है। चीन भी भारत के खिलाफ पाकिस्तान को समर्थन देता है और अब व्यापार के फायदे को देखते हुए अमेरिका और चीन बाकी विवादों को सुलझा लेंगे, तब भारत के लिए खतरे कितने बढ़ जाएंगे, इस बात पर मोदी सरकार को ध्यान देना चाहिए। भारत पर तो अमेरिका ने भारी भरकम टैरिफ लगा ही दिया है, इसके अलावा एच 1 बी वीजा को भी इतना कठिन कर दिया है कि हजारों परिवार इससे प्रभावित हो गए हैं। वहीं चीन पर भी अमेरिका ने टैरिफ लगाया था, जिसके जवाब में चीन ने अमेरिकी किसानों से सोयाबीन खरीद को रोक लगाकर अमेरिका की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर चोट की है। इसके अलावा चीन रेयर अर्थ यानी धरती के दुर्लभ खनिजों को भी अमेरिका पर दबाव बनाने के लिए इस्तेमाल कर रहा है। ये ऐसे खनिज हैं, जिनके बिना सेमीकंडक्टर, हथियार सिस्टम, गाड़ियां या स्मार्टफोन तक नहीं बनाए जा सकते। अमेरिका की अर्थव्यवस्था को इन दुर्लभ खनिजों की लगातार जरूरत है। चीन के अलावा और जिन देशों में इनकी उपलब्धता है, वहां तो अमेरिकी दबाव काम कर जाता है, मगर चीन के साथ ट्रंप को आमने–सामने समझौता करना पड़ेगा। चीन की भी व्यापार, रोजगार आदि की अपनी समस्याएं हैं, जो अमेरिकी टैरिफ से और बढ़ी हैं। लिहाजा दोनों देश अब व्यापार के मुनाफे को अहमियत देते हुए किसी बड़े समझौते पर राजी हो सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति इसी तरह काम करती है, जहां अपना नुकसान कराए बिना सामने वाले पक्ष को राजी किया जाता है। फिलहाल भारत में ऐसी कूटनीति नदारद है। नरेन्द्र मोदी दुनिया भर के नेताओं से गले मिल लें, हाथ मिलाकर फोटो खिंचवा लें, हंसी–ठठ्ठा करते दिखें, लेकिन जनता के ध्यान पर हो रही इन खर्चीली मुलाकातों से देश को आखिर में क्या हासिल हो रहा है, यह सवाल सरकार से किया जाना चाहिए। ट्रंप से मलेशिया में मुलाकात कर, आंख में आंख डालकर अगर मोदी यह पूछ सकते कि आप हमें कैसे निर्देशित कर सकते हैं कि हम रुस से तेल खरीदें या न खरीदें। अगर मोदी यह पूछ सकते कि पाकिस्तान के साथ हमारे संबंधों पर आप बिना अधिकार के बयान क्यों दे रहे हैं। अगर मोदी यह पूछ सकते कि आपने मेरे देश के लोगों को जंजीरों में बांधकर अपने सैन्य जहाज में भरकर क्यों भेजा। तब तो मोदी के विश्वगुरु बनने की संभावनाएं दिखतीं, अभी तो संभावनाओं की जगह केवल शर्मिंदगी दिख रही है।

वोट बैंक की राजनीति ने अपनी सभ्यता को भी तिलांजलि दे दी

रोहित कौशिक

अपने अनर्गल बयानों के लिए चर्चित केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने एक बार फिर मुसलमानों के संदर्भ में एक आपत्तिजनक बयान दे दिया। गिरिराज सिंह ने बिहार में आयोजित एक रैली में मुसलमानों को नमक हराम बता दिया। गिरिराज सिंह ने रैली में मुस्लिम मौलवी के साथ अपनी कथित बातचीत का हवाला देते हुए कहा कि भाजपा इनसे वोट नहीं चाहती। गिरिराज सिंह ने कहा कि मुसलमान भाजपा सरकार द्वारा दी गई योजनाओं का भरपूर लाभ उठाते हैं लेकिन भाजपा को वोट नहीं देते हैं। हमें इनका वोट नहीं चाहिए। एक रैली में खुल्लमखुल्ला मुसलमानों पर विवादास्पद टिप्पणी करना यह दर्शाता है कि भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के दिल में मुसलमानों के प्रति कितना जहर भरा है। यह बहुत ही शर्मनाक है। ऐसे शर्मनाक बयान देना न केवल भारतीय लोकतंत्र का अपमान है बल्कि भारतीय संविधान का अपमान भी है। अगर विपक्ष का कोई नेता अनर्गल बयान दे देता है तो भारतीय जनता पार्टी उसे देशद्रोही सिद्ध कर देती है। क्या भारतीय जनता पार्टी अपने केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह पर कोई कार्रवाई करेगी? भारतीय जनता पार्टी के इतिहास को देखते हुए तो ऐसा नहीं लगता कि वह गिरिराज सिंह पर कोई कार्रवाई करेगी। कांग्रेस प्रवक्ता सुरेन्द्र राजपूत की माता जी के संबंध में आपत्तिजनक बात कहने वाले प्रेम शुक्ला पर भी अभी तक भारतीय जनता पार्टी ने कोई कार्रवाई नहीं की है। हालांकि यह बयान देने के बाद गिरिराज सिंह ने सफाई देते हुए कहा कि मेरे बयान को गलत संदर्भ में समझा गया। मैंने कहा कि जो लोग यह कहते हैं कि हमारे धर्म में हराम का खाना सही नहीं कहा गया है। यानी किसी का मुफ्त का खाना हराम है। मैं यही कह रहा हूं कि क्या मुसलमान 5 किलो अनाज नहीं ले रहे हैं? क्या प्रधानमंत्री आवास हिन्दू और मुसलमान दोनों को नहीं मिला है? क्या शौचालय हिन्दू और मुसलमान दोनों को नहीं मिला है? क्या नल–जल में हिन्दू–मुसलमान हुआ? क्या गैस सिलैंडर में हिन्दू–मुसलमान हुआ? क्या 5 किलो अनाज में हिन्दू–मुसलमान हुआ? मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूं कि जो दिन–रात हाय तौबा मचा रहे हैं कि बुर्का उठेगा या नहीं उठेगा। मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूं कि आप इतना चिड़क्षतत क्यों हैं? नरेन्द्र मोदी ने कभी हिन्दू–मुसलमान नहीं किया? गिरिराज सिंह ने अपनी सफाई में ये सब बातें तो कह दीं लेकिन ये बातें कहकर भी उन्होंने अंततरू मुसलमानों को परोक्ष रूप से गलत ही बता दिया। इसका अर्थ यह है कि गिरिराज सिंह चाहते हैं कि मुसलमान सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के बदले भारतीय जनता पार्टी को वोट दें। सवाल यह है कि सरकारी योजनाएं सरकार की जिम्मेदारी है या फिर एक तरह की रिश्वत है? क्या यह रिश्वत देकर मुसलमानों से वोट की अपेक्षा की जा रही है? क्या गिरिराज सिंह सरकारी योजनाओं को रिश्वत कहना चाह रहे हैं? सरकारी योजनाओं का लाभ देकर सरकार किसी भी धर्म के लोगों पर कोई उपकार नहीं कर रही है। एक आम आदमी को बेहतर जिंदगी प्रदान करना सरकार का कर्त्तव्य है। यदि सरकार अपने इस कर्त्तव्य के बदले मुसलमानों से वोट की अपेक्षा रख रही है तो इससे बड़ा सरकारी भ्रष्टाचार और कुछ नहीं हो सकता। गिरिराज सिंह की सफाई का साफ मतलब है कि जनता को सरकारी योजनाएं प्रदान करने का उद्देश्य जनकल्याण का नहीं होता है बल्कि उसका उद्देश्य वोट बैंक होता है। इस दौर की राजनीति का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही है कि भाषा की मर्यादा लगातार खत्म होती जा रही है और राजनीतिक दल ऐसे नेताओं के बयानों पर कोई कार्रवाई नहीं करते हैं। किसी भी जाति और धर्म के खिलाफ ऐसे बयान न केवल राजनेताओं की मानसिकता प्रदर्शित करते हैं बल्कि यह भी दिखाते हैं कि वोट बैंक की राजनीति के चक्कर में हमने अपनी सभ्यता को भी तिलांजलि दे दी है। भारतीय जनता पार्टी के नेताओं में मुसलमानों के प्रति जो नफरत भरी हुई है, वह उसका प्रदर्शन समय–समय पर करती रहती हैं। जाहिर है ऐसे राजनेताओं को उनके आकाओं से ही खाद–पानी मिलता है, तभी वे नफरत की राजनीति करते हैं। सवाल यह है कि मुसलमानों पर बार–बार सवाल क्यों उठाया जाता है? मुस्लिम भाइयों पर स्वयं को देशभक्त सिद्ध करने का दबाव बार–बार क्यों डाला जाता है? क्या किसी भी नेता के कहने से मुसलमान नमक हराम हो जाएंगे? आजादी की लड़ाई में मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि ऐसी विचारधारा के लोग मुसलमानों पर सवाल उठाते हैं जिनका आजादी की लड़ाई में कोई योगदान नहीं रहा। किसान आन्दोलन में इसी विचारधारा के लोगों ने सिखों को खालिस्तानी कहा था। मुसलमान इस देश की अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। क्या मुसलमानों के बिना इस देश की कल्पना की जा सकती है? जिस तरह उदार हिन्दुओं के बीच कट्टर हिन्दू मौजूद हैं, हो सकता है कि ठीक उसी तरह कुछ मुसलमानों के अंदर भी कट्टरता का तत्व मौजूद हो लेकिन इस आधार पर उन्हें ऐसा कहना बहुत ही शर्मनाक है। ऐसे मामलों में राजनीतिक दलों की एक बड़ी गलती यह है कि वे अनर्गल टिप्पणी करने वाले अपने दल के राजनेताओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई नहीं करते हैं। राजनीतिक दलों को ऐसे राजनेताओं को कड़ी सजा देनी चाहिए। हमें यह समझना होगा कि इस दौर में नफरत की नहीं, बल्कि प्रेम की राजनीति से ही समाज का भला हो सकता है। (यह लेखक के निजी विचार हैं।)

आरएसएस की स्थापना शुरुआती दलित लामबंदी के विरुद्ध भी एक प्रतिक्रिया थी

आनंद तेलतुंबडे

पारंपरिक कहानी आरएसएस को मुख्य रूप से हिंदू–मुस्लिम दंगों और मुस्लिम प्रभुत्व के कथित खतरे के जवाब में गठित होने के रूप में प्रस्तुत करती है। हालांकि यह सांप्रदायिक आयाम वास्तविक और अच्छी तरह से प्रलेखित है, यह एक समान रूप से–यदि अधिक नहीं– महत्वपूर्ण प्रेरणा को अस्पष्ट करता हैरू ब्राह्मणवादी अभिजात वर्ग की बढ़ती जाति–विरोधी आंदोलनों के प्रति प्रतिक्रिया जो उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रभुत्व को खतरे में डाल रहे थे। आरएसएस के गठन को समझने के लिए दोनों खतरों की एक साथ जांच करने की आवश्यकता हैरू मुस्लिम राजनीतिक दावे का बाहरी खतरा और ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती देने वाले निम्न–जाति मुक्ति आंदोलनों का आंतरिक खतरा। 1925 में नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना–जिसे आज हिंदू राष्ट्रवाद की वैचारिक राजधानी के रूप में मनाया जाता है–में एक गहरा ऐतिहासिक विरोधाभास है। 20वीं सदी की शुरुआत में नागपुर केवल मध्य भारत का एक प्रांतीय शहर नहीं थाय यह गहन सामाजिक परिवर्तन का स्थल था। इस क्षेत्र में ज्योतिबा फुले के सत्यशोधक समाज का प्रसार, गैर–ब्राह्मण आंदोलनों का उदय और शुरुआती दलित राजनीतिक गतिविधि का उद्भव देखा गया था। हिंदू एकता के लिए एक खाली स्लेट होने के बजाय, यह जातिगत टकराव और ब्राह्मण विरोधी उथल–पुथल का एक केंद्र था। इस पृष्ठभूमि में, आरएसएस के हिंदू एकता के बयान को हिंदू पहचान के एक समावेशी पुनर्गठन के रूप में कम और एक रणनीतिक प्रति–क्रांति के रूप में अधिक पढ़ा जा सकता है–मुस्लिम दावे और दलितध्गैर–ब्राह्मण लामबंदी द्वारा उत्पन्न दोहरी चुनौतियों को बेअसर करने की एक परियोजना। औपनिवेशिक काल के दौरान विदर्भ क्षेत्र में महार समुदाय के कई लोगों ने समृद्धि प्राप्त की और उन्होंने स्वाभाविक रूप से सामाजिक उत्थान की ओर कदम बढ़ाया। इस क्षेत्र में दलित आंदोलन का इतिहास जैसा कि एम.एल. कासारे 1884 से इन गतिविधियों की गवाही देते हैं। वह लिखते हैं कि पूरे विदर्भ में महारों का एक कार्यात्मक नेटवर्क था जो कल्याण और सुधार गतिविधियों में सक्रिय था। इसके अलावा, इसका उद्देश्य हिंदू समाज के ढांचे के भीतर और कानूनी तरीके से अछूतों की दुर्दशा और मानवाधिकारों के बारे में दूसरों को जागरूक करना भी था। किसन फागोजी बंसोडे जैसे कई उल्लेखनीय स्थानीय नेता उभरे, लेकिन पश्चिमी महाराष्ट्र से महात्मा फुले, गोपाल बाबा वालंगकर और शिवराम जनबा कांबले से प्रभावित समानांतर नेटवर्क भी थे। महार नेताओं के बीच विट्ठल रामजी शिंदे के भी काफी अनुयायी थे। 19वीं सदी के आखिर से, विदर्भ सत्यशोधक आंदोलन के प्रसार में एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जिसने ब्राह्मणवादी सत्ता को खारिज कर दिया और सभी मनुष्यों की समानता की घोषणा की। जाति पदानुक्रम पर फुले की कट्टर आलोचना इस क्षेत्र के शूद्र और दलित समुदायों के बीच गूंजी। उनके अनुयायियों ने नागपुर, अमरावती और वर्धा के मराठी भाषी जिलों में सत्यशोधक समाज की शाखाएँ स्थापित कीं, और शिक्षा, तर्कवाद और सामाजिक समानता के उनके कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। 1908 में विट्ठल रावजी मून पांडे, एक पुराने जमाने के समुदाय सुधारक, ने महार सभा की स्थापना की, जो अंबेडकर–पूर्व दलित आंदोलन में एक बहुत महत्वपूर्ण संगठन बन गया। इसने 13–15 अप्रैल 1913 को टाउन हॉल, नागपुर में एक ऐतिहासिक सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें पूरे मराठी भाषी क्षेत्र के समुदाय के नेताओं ने भाग लिया। सभा में न केवल मालगुजार, साहूकार, ठेकेदार, दलाल, लकड़ी के व्यापारी, पटवारी, क्लर्क, शिक्षक, संत, पुजारी, शेट्ये और अन्य संपन्न महार शामिल थे, बल्कि पुणे के शिवराम जनबा कांबले, मुंबई के धोंडीबा नारायण गायकवाड़, नासिक के धर्मदास संत और पंढरपुर के बापूजी पांडे जैसे लोग भी शामिल थे।1910 और 1920 के दशक तक, विदर्भ जाति–विरोधी सक्रियता का केंद्र बन गया था। शिक्षा तक पहुँच, मंदिर प्रवेश और नागरिक अधिकारों के लिए लामबंदी का एक स्पष्ट आंदोलन था – अंबेडकर के राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरने से दशकों पहले। शिंदे का डिप्रेस्ड क्लासेस मिशन और नागपुर में महारों और मांगों के बीच बंसोडे का समाज सुधार का काम एक बढ़ती हुई जागरूकता को दिखाता था, जो नैतिक सुधार और राजनीतिक कार्रवाई दोनों के जरिए सामाजिक समानता चाहती थी। इसी दौर में, स्थानीय पैम्फलेट और लोकल मीटिंग्स में प्रशासन और शिक्षा में ब्राह्मणों के दबदबे पर खुलकर हमला किया गया, जो पश्चिमी महाराष्ट्र में बड़े नॉन–ब्राह्मण आंदोलन की आवाज थी। इस उथल–पुथल ने पारंपरिक ब्राह्मण व्यवस्था को हिला दिया। निचली जातियों के बढ़ते दावे ने धार्मिक और राष्ट्रवादी दोनों क्षेत्रों में ब्राह्मण नेतृत्व की सामाजिक वैधता को खत्म करने की धमकी दी। 1920 के दशक की शुरुआत तक, नागपुर के उच्च जाति के अभिजात वर्ग में चिंता साफ दिखाई दे रही थीरू शिक्षा, धार्मिक अधिकार और राष्ट्रवादी राजनीति पर उनके ऐतिहासिक एकाधिकार को एक साथ नीचे से दलित और शूद्र आंदोलनों और बाहर से मुस्लिम राजनीतिक दावों से चुनौती मिल रही थी। 1909 के मॉर्ले–मिंटो सुधार भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थे। उन्होंने न केवल मुसलमानों को अलग निर्वाचक मंडल दिए, बल्कि मुस्लिम लीग के इस तर्क को भी स्वीकार कर लिया कि अछूतों और आदिवासी समुदायों को हिंदू नहीं गिना जाना चाहिए। नतीजतन, 1911 की जनगणना ने हिंदू आबादी को तीन श्रेणियों में विभाजित किया – हिंदू, दलित वर्ग और एनिमिस्ट हिंदू (जनजातियां)–जिससे तथाकथित हिंदू समुदाय के भीतर आंतरिक विभाजन को संस्थागत रूप दिया गया।इस विकास ने ब्राह्मण नेतृत्व को बहुत परेशान कर दिया, जो लंबे समय से यह मान रहा था कि एक बार जब अंग्रेज भारत छोड़ देंगे तो राजनीतिक सत्ता की बागडोर स्वाभाविक रूप से उनके हाथों में आ जाएगी। अंग्रेजों द्वारा आगामी मोंटेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधारों (1919) के माध्यम से सत्ता के और हस्तांतरण का वादा करने के साथ, कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने 1916 के लखनऊ समझौते के माध्यम से एक संयुक्त मोर्चा पेश करने की कोशिश की।इस समझौते ने मुसलमानों के लिए सांप्रदायिक निर्वाचक मंडल को मान्यता दी और समुदाय की पहचान के आधार पर राजनीतिक प्रतिनिधित्व को परोक्ष रूप से वैध बनाया।हालांकि, इस व्यवस्था के अनचाहे परिणाम हुए। कांग्रेस के लिए दलित वर्गों को हिंदू समुदाय के भीतर बनाए रखना अनिवार्य हो गया, कहीं ऐसा न हो कि मुस्लिम लीग के मुकाबले उसकी संख्यात्मक और राजनीतिक ताकत कमजोर हो जाए। इस प्रकार इस समझौते ने अनजाने में प्रतिनिधित्व के क्षेत्र को हिंदू–मुस्लिम द्वंद्व से आगे बढ़ा दिया। एक बार जब सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को मान लिया गया, तो दलित वर्ग न्यायोचित रूप से अलग राजनीतिक मान्यता का दावा कर सकते थे – कुछ ऐसा जिसने कांग्रेस की राजनीतिक गणना को उलट देने की धमकी दी। वास्तव में, समझौते के तुरंत बाद, बॉम्बे प्रेसीडेंसी में दलित वर्गों के संगठनों ने अलग प्रतिनिधित्व, अस्पृश्यता के उन्मूलन और शिक्षा और सार्वजनिक रोजगार तक पहुंच की मांगों को उठाना शुरू कर दिया। 1917 और 1920 के बीच, महाराष्ट्र में दलित वर्गों के कम से कम चार प्रमुख सम्मेलन आयोजित किए गए, जो कांग्रेस के कहने पर हुए और जिनमें लोकमान्य तिलक सहित प्रमुख नेताओं ने भाग लिया। उठाई गई कई मांगें दृ जैसे कि आरक्षित सीटें, मंदिर में एंट्री, और जाति–आधारित भेदभाव को खत्म करना दृ सीधे तौर पर हिंदू सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दे रही थीं, जिसे कांग्रेस के बड़े नेता सुधारने में हिचकिचा रहे थे। इन घटनाओं से ब्राह्मणवादी खेमा चिंतित हो गया, जिसने इन्हें अपनी सामाजिक प्रभुत्व और राजनीतिक सत्ता के लिए सीधा खतरा माना।एक खास अहम पल नागपुर में डिप्रेस्ड क्लासेस कॉन्फ्रेंस के साथ आया, जिसे मई 1920 में कोल्हापुर के शाहू महाराज ने बुलाया था। इस कार्यक्रम ने इस क्षेत्र में दलित नेतृत्व की बढ़ती राजनीतिक समझ को दिखाया। यहीं पर एक युवा बी. आर. अंबेडकर, जो तब तक कोई जानी–मानी हस्ती नहीं थे, ने एक जोशीला भाषण दिया जिसमें उन्होंने घोषणा की कि अछूतों की मुक्ति खुद अछूतों को ही हासिल करनी होगी। उनके शब्दों ने ऊंची जाति के पितृसत्ता से एक निर्णायक ब्रेक लिया और एक स्वतंत्र दलित राजनीतिक चेतना के उदय का संकेत दिया जो जल्द ही भारतीय राजनीति के मैदान को बदल देगा।नागपुर, जो भविष्य में आरएसएस का जन्मस्थान बना, 1920 तक जातिगत टकराव का केंद्र बन गया था। नागपुर के बड़े लोग दृ ज्यादातर चितपावन और देशस्थ ब्राह्मण दृ इन घटनाओं को चिंता की नजर से देख रहे थे। सेंट्रल प्रोविंसेस इंटेलिजेंस रिपोर्ट्स (1921,23) के आर्काइव सबूत डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन के बीच "विनाशकारी गतिविधियों" पर बढ़ती चिंता को दिखाते हैं, जिन्हें "मिशनरी और गैर–हिंदू तत्वों द्वारा बढ़ावा दिया गया" माना जाता था। यह चिंता सिर्फ धर्म को लेकर नहीं थी, बल्कि सामाजिक नियंत्रण खोने को लेकर भी थी। हिंदू महासभा और सेवा समिति जैसे ब्राह्मणों के नेतृत्व वाले हिंदू सुधार संगठनों ने "अछूतों को हिंदू धर्म में फिर से शामिल करने" के लिए जवाबी बैठकें आयोजित करना शुरू कर दिया।इसी संदर्भ में, के.बी. हेडगेवार, जिन्होंने 1925 में नागपुर में आरएसएस की स्थापना की, पहले से ही हिंदू महासभा की स्थानीय शाखा में सक्रिय थे। 1922–23 के उनके भाषणों से पता चलता है कि उनका मानना था कि हिंदू समाज की ताकत "अनुशासन और एकता" में है और "जातिगत विभाजन और विदेशी धर्म राष्ट्र को कमजोर करते हैं"।

राखी सावंत ने उर्वशी रौतेला से तुलना पर तोड़ी चुप्पी, कहा- "मैं झूठ नहीं बोलती"

बॉलीवुड की जानी–मानी और हमेशा सुर्खियों में रहने वाली राखी सावंत ने हाल ही में एक इवेंट के दौरान अभिनेत्री उर्वशी रौतेला से अपनी तुलना किए जाने पर अपनी नाराजगी जाहिर की। राखी ने कहा कि वे झूठ नहीं बोलतीं और उनका अंदाज पूरी तरह से अलग है। इस दौरान उन्होंने अपनी महंगी ज्वेलरी और ग्लैमरस लुक से भी सबका ध्यान खींचा। ज्वेलरी और लुक की चर्चा के बीच, जब उनसे यह पूछा गया कि क्या वे अभिनेत्री उर्वशी रौतेला के साथ प्रतिस्पर्धा महसूस करती हैं, तो राखी सावंत ने तुरंत प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, "मैं उर्वशी रौतेला की तरह झूठ नहीं बोलती। मेरी तुलना आप ब्रिटनी स्पीयर्स, जेनिफर लोपेज, शकीरा, पेरिस हिल्टन और किम कार्दशियन से करें।" राखी ने आगे मजाकिया अंदाज में कहा कि उनका गाना 'जरूरत' और उर्वशी का गाना दोनों ही अलग हैं, और उनकी तुलना करना सही नहीं। इवेंट में राखी सावंत ने सुनहरे रंग के हेडपीस और चमकदार चांदी का हार पहनकर लहंगा–चोली में एंट्री ली। उन्होंने बताया कि उनके हेडपीस की कीमत लगभग 50 करोड़ और हार की कीमत 20 करोड़ रुपए है। इस लुक के साथ उनका अंदाज भी काफी आकर्षक रहा। राखी की टिप्पणियों के तुरंत बाद उनके पास की एक लाइट बुझ गई, जिस पर उन्होंने हल्के–फुल्के अंदाज में कहा, "इतना मनहूस था क्या गाना?" इस दौरान उनकी बातचीत और हाव–भाव ने इवेंट में मौजूद लोगों का मनोरंजन कर दिया। राखी सावंत का नया गाना 'जरूरत' रोमांटिक शैली में है। इस गाने को सैफ अली ने गाया और संगीतबद्ध किया है, जबकि बोल आयुष ने लिखे हैं। गाने में राखी, अभिनेता शाहबाज खान के साथ रोमांटिक अंदाज में नजर आ रही हैं। यह गाना फैंस के बीच काफी चर्चा में है और रिलीज के बाद सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

> राखी सावंत ने कहा, "मैं उर्वशी रौतेला की तरह झूठ नहीं बोलती। मेरी तुलना आप ब्रिटनी स्पीयर्स, जेनिफर लोपेज, शकीरा, पेरिस हिल्टन और किम कार्दशियन से करें।" राखी ने आगे मजाकिया अंदाज में कहा कि उनका गाना 'जरूरत' और उर्वशी का गाना दोनों ही अलग हैं, और उनकी तुलना करना सही नहीं।

शिबानी–फरहान का वेकेशन रोमांस, बिकिनी में दिखा शिबानी का हॉट लुक

बॉलीवुड कपल शिबानी दांडेकर और फरहान अख्तर ने हाल ही में वेकेशन पर बिताए गए रोमांटिक पलों की तस्वीरें साझा कर फैंस को कपल गोल्स का नया अंदाज दिखाया। बीच किनारे क्वॉलिटी टाइम बिताते हुए दोनों अपने प्यार का खुलकर इजहार करते नजर आए, जिसमें शिबानी फरहान की बांहों में रोमांटिक अंदाज में दिखाई दीं। बॉलीवुड कपल शिबानी दांडेकर और फरहान अख्तर फैंस को बार–बार कपल गोल्स देते नजर आते हैं। हाल ही में, शिबानी ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर वेकेशन की रोमांटिक फोटोज शेयर की हैं, जिसमें दोनों बीच किनारे क्वॉलिटी टाइम बिताते दिखे। एक तस्वीर में फरहान को शिबानी को गाल पर किस करते हुए देखा गया, जो उनके रोमांटिक वेकेशन का खास पल साबित हुआ। शिबानी ने तस्वीरों के साथ कैप्शन में लिखा, "बीच, सन, सैंड और जिंदगीभर साथ रहने वाली यादें। लव यू फरहान।" फोटोज में शिबानी को फरहान की बांहों में नजर आते हुए देखा जा सकता है, जबकि कपल अपने प्यार में पूरी तरह डूबा नजर आया। वेकेशन के दौरान शिबानी का ग्लैमरस अवतार फैंस को काफी आकर्षित कर रहा है। उन्होंने पोलका डॉट बिकिनी में स्टनिंग लुक दिखाया, जिसमें उनका परफेक्ट शेप और फिटनेस साफ नजर आ रही थी। फैंस ने उनकी इस तस्वीर को सोशल मीडिया पर काफी पसंद किया। शिबानी और फरहान की ये फोटोज सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं। फैंस उनकी केमिस्ट्री, स्टाइल, और रोमांटिक पलों की जमकर तारीफ कर रहे हैं।

ये एक बुरी नजर थी.. युविका चौधरी ने कबूली प्रिंस संग अनबन की बात, बताया कैसे संभाला रिश्ता

टीवी इंडस्ट्री के फेमस कपल प्रिंस नरूला और युविका चौधरी कुछ दिनों पहले अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर खूब सुर्खियों में आए थे। उनके पहले बच्चे, एकलीन के जन्म के तुरंत बाद ही अफवाहें फैलने लगी कि दोनों की शादीशुदा जिंदगी में कुछ भी ठीक नहीं चल रहा और दोनों अलग हो गए हैं। हालांकि, इसके बावजूद भी कई बार दोनों को एक साथ देखा गया। वहीं, अब हाल ही में युविका चौधरी ने पति प्रिंस से अलग होने की खबरों पर चुप्पी तोड़ी है। दरअसल, हाल ही में युविका चौधरी ने गोविंदा की पत्नी सुनीता आहूजा के एक व्लॉग में अपनी निजी जिंदगी के बारे में खुलकर बात की। इस नए एपिसोड में, युविका, सुनीता के साथ एक मंदिर जाती हैं, जहां दोनों चर्चा करती हैं कि कैसे नजर (बुरी नजर) जीवन के विभिन्न पहलुओं पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। सुनीता आहुजा कहती हैं–मुझे पता चल जाता है कि मुझ पर, मेरे बच्चों पर या मेरे परिवार पर किसकी बुरी नजर है या कौन काला जादू करता है। मुझे यह आभास हमेशा होता है। परिवार के अंदर और बाहर भी कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी बुरी नजर होती है। आज गोविंदा और मैं इंडस्ट्री के सबसे अच्छे कपल हैंय यह बात सबको पता है। हमने साथ में बहुत काम किया है, और अक्सर परिवार को ही बुरी नजर लग जाती है जब वह अपनी पत्नी और बच्चों की बात मानता है। मैं हमेशा अपने परिवार को दोष देती हूं क्योंकि वे दूसरों को खुश नहीं देख सकते। फिर सुनीता युविका से पूछती हैं कि उन्होंने कुछ समय पहले सुना था कि युविका और प्रिंस की शादी में भी कुछ अनबन चल रही थी क्या असलियत में ऐसा कुछ था? इस पर युविका कहती हैं, ष्यह बुरी नजर थी। जब आप लोगों की नजरों में इतने ज्यादा आ जाते हैं, तो आपकी एनर्जी बदल जाती है। सुनीता ने पूछा कि इस मुश्किल दौर से उन्होंने कैसे निपटा, तो युविका ने कहा, ष्मैंने सब कुछ भगवान पर छोड़ दिया। मैं आध्यात्मिक हो गई और खुद से प्यार करने लगी, जिससे मुझे उन समस्याओं से उबरने में मदद मिली।ष इस पर सुनीता ने कहा, ष्यह सब एक दौर है। जो होना तय है, उसे कोई नहीं रोक सकता। जो कोई भी घर तोड़ने की कोशिश करेगा, भगवान उसे सजा देंगे, और हम उसे देखेंगे।

एक्ट्रेस तेजस्विनी लोनारी ने की गुपचुप सगाई, शिवसेना नेता समाधान सरवनकर संग की नई शुरुआत

मराठी सिनेमा और टेलीविजन की जानी–मानी एक्ट्रेस तेजस्विनी लोनारी ने अपने फैंस को एक बड़ी खुशखबरी दी है। 'बिग बॉस मराठी' सीजन 4 की होस्ट रह चुकी तेजस्विनी ने चुपचाप सगाई कर ली है। एक्ट्रेस की सगाई की तस्वीरें और वीडियोज सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे हैं, जिन्हें देखकर फैंस उन्हें ढेरों शुभकामनाएं दे रहे हैं। तेजस्विनी लोनारी ने 27 अक्टूबर 2025 को शिवसेना नेता समाधान सरवनकर के साथ सगाई की। यह समारोह बेहद निजी रखा गया, जिसमें सिर्फ परिवार के सदस्य और करीबी रिश्तेदार शामिल हुए। सोशल मीडिया पर सामने आए एक वीडियो में तेजस्विनी और समाधान एक–दूसरे को अंगूठी पहनाते नजर आ रहे हैं। दोनों के चेहरे पर खुशी और प्यार साफ झलक रहा है। सगाई के इस खास मौके पर तेजस्विनी लोनारी पारंपरिक मराठी लुक में नजर आईं। उन्होंने खूबसूरत साड़ी और पारंपरिक ज्वेलरी पहन रखी थी, जिसने उनके लुक को रॉयल टच दिया। वहीं, समाधान सरवनकर ने एथनिक कुर्ता–पायजामा पहना और बेहद एलिगेंट लगे। बता दें, तेजस्विनी मराठी फिल्म और टीवी इंडस्ट्री की लोकप्रिय एक्ट्रेसेस में से एक हैं। उन्होंने कई हिट टीवी शोज और फिल्मों में काम किया है। 'बिग बॉस मराठी सीजन 4' में बतौर होस्ट उनकी मौजूदगी को दर्शकों ने खूब पसंद किया था।

परेश रावल की फिल्म 'द ताज स्टोरी' पर विवाद, कानूनी लड़ाई शुरू

आगामी फिल्म द ताज स्टोरी का ट्रेलर गुरुवार (16 अक्टूबर) को जारी किया गया था, जिसमें अभिनेता परेश रावल एक पर्यटक गाइड की भूमिका में हैं, जो भारत के सबसे प्रसिद्ध स्मारक से जुड़े कथित रहस्यों को उजागर करना चाहता है। हालाँकि इसे सुस्थापित इतिहास पर संदेह जताने के लिए कुछ आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है, लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि ताज के बारे में दावे नए नहीं हैं। मई 2022 में, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक याचिका खारिज कर दी जिसमें ष्ताजमहल के वास्तविक इतिहास का अध्ययन और प्रकाशन करने के लिए एक तथ्य खोजी समितिष और षविवाद को शांत करने के लिए ताजमहल के अंदर सीलबंद दरवाजों (लगभग 22 कमरों) को खोलने का निर्देशष देने की मांग की गई थी।

भाजपा पदाधिकारी ने परेश रावल की फिल्म 'द ताज स्टोरी' पर प्रतिबंध लगाने की मांग की

फिल्म द ताज स्टोरी को लेकर अक और दावा अब सामने आया है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की स्थानीय इकाई के एक पदाधिकारी ने सूचना और प्रसारण मंत्रालय और केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) में एक शिकायत दर्ज कर अभिनेता परेश रावल अभिनीत आगामी फिल्म द ताज स्टोरी पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है और दावा किया है कि यह फिल्म उच्च न्यायालय में दायर उनकी एक याचिका के विषय पर आधारित है।

ताजमहल के 22 कमरों को खुलवाने की याचिका

भाजपा की अयोध्या इकाई के प्रवक्ता रजनीश सिंह ने अक्टूबर 2022 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में एक याचिका दायर की थी, जिसमें ताजमहल के अंदर के 22 बंद कमरों को खोलने की मांग करते हुए यह दावा किया गया था कि स्मारक मूल रूप से एक मंदिर था। सोमवार को सूचना और प्रसारण मंत्रालय और सीबीएफसी को अपनी शिकायत में, सिंह ने कहा, "मैंने ताजमहल के 22 बंद कमरों को खोलने के लिए एक जनहित याचिका दायर की थी। उक्त याचिका में मेरा उद्देश्य केवल ऐतिहासिक तथ्यों की पारदर्शिता और सत्यापन सुनिश्चित करना था। मुझे पता चला है कि फिल्म द ताज स्टोरी मेरी याचिका के विषय पर आधारित है। उन्होंने आरोप लगाया कि "फिल्म के पोस्टर, प्रचार सामग्री और कहानी में, न्यायिक विषय वस्तु, याचिका का संदर्भ, और संबंधित विवरण मेरी अनुमति के बिना और भ्रामक तरीके से प्रस्तुत किए गए हैं। यह मेरे बौद्धिक और कानूनी अधिकारों का उल्लंघन है। किसी न्यायिक मामले का व्यावसायिक उपयोग भी अनुचित है। सिंह ने कहा, ऐसी फ़िल्म की स्क्रीनिंग न केवल न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है, बल्कि सामाजिक और धार्मिक भावनाओं में अनावश्यक तनाव भी पैदा कर सकती है। भाजपा नेता ने सेंसर प्रक्रिया और द ताज स्टोरी की सार्वजनिक रिलीज पर तत्काल रोक की मांग की है। उन्होंने कहा कि यह निर्धारित करने के लिए फिल्म की स्क्रिप्ट और कहानी की जांच की जानी चाहिए कि क्या इसमें सहमति के बिना उनकी याचिका की सामग्री या किसी बौद्धिक कार्य का उपयोग किया गया है। भाजपा नेता ने जांच पूरी होने तक फिल्म के प्रचार, स्क्रीनिंग और प्रसारण को प्रतिबंधित करने का आग्रह किया है।

बदलते मौसम में बीमारियों से बचाएगा आंवले का अचार, इम्यूनिटी को देगा सुपर बूस्ट! जानिए कैसे बनाएं आंवले का अचार

आंवला खाने से सेहत मस्त–मस्त रहती है। आंवले में विटामिन ए, बी और सी होते हैं और इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं। इसके सेवन से इम्यूनिटी बूस्ट होती है। बदलते मौसम में आंवले का सेवन करने से हेल्थ भी मस्त रहती हैं और बीमारियां भी दूर रहती है। खासकर बच्चे आंवले के सेवन करने से मना करते हैं, तो आप इस मजेदार तरीके से आंवला अचार बना सकते हैं, इसे सब पसंद करेंगे। अचार खाना पंसद हैं, तो इंस्टेंट आंवले का अचार बनाएं। आइए आपको आंवले का इंस्टेंट अचार बना सकते हैं।

आंवले का इंस्टेंट अचार बनाने की सामग्री

– आधा से एक किलो आंवला
– एक चम्मच राई
– एक चम्मच जीरा
– दो चम्मच धनिया
– आधा चम्मच मेथी
– काली मिर्च
– सौंफ एक चम्मच
– लाल मिर्च पाउडर
– सरसों का तेल
– हल्दी
– लाल मिर्च पाउडर
– नमक स्वादानुसार
– आठ से दस हरी मिर्च

इंस्टेंट आंवला अचार बनाने की रेसिपी

– इसके लिए आंवले को अच्छे से धोकर सुखा लें।

– अब आप इन आंवलों को प्रेशर कुकर में उबाल लें फिर उबलते पानी में डालकर हल्का नर्म पड़ने तक पकाएं। फिर गैस से उतारकर सारे आंवलों को छान लें।

– फिर बीजों को हटाकर आंवले के चार भाग करें और इसके बाद करीब दो घंटे तक धूप लग जाने दीजिए। ताकि इसका पानी खत्म हो जाए।

– एक पैन में सारे मसाले ड्राई रोस्ट कर लीजिए। इसमें राई, जीरा, धनिया, मेथी, काली मिर्च, लाल मिर्च डालकर भून लें।

– अब इसको ग्राइंडर में पीस कर पाउडर बना लें।

– सरसों तेल को लें और इसे गैस पर पका लें। ताकि तेल का कच्चापन चला जाए।

– तेल गर्म होने के बाद इसमें हल्दी, लाल मिर्च पाउडर और तैयार मसाले डालें और साथ ही आंवले को डालकर ऊपर से नमक डालकर मिक्स करें। बस तैयार है इंस्टेंट आंवले का अचार।

– इसके बाद आप कटी हुई ताजी हारी मिर्च को भी डाल दें। इससे आपके अचार का टेस्ट बढ़ जाएगा।

शॉर्ट नहीं अब शर्ट ड्रेस का है फैशन, जरूर करें अपने वॉर्डरोब में शामिल

कुछ समय पहले जहां क्रॉप टॉप के क्रेज सिर चढ़ कर बोल रहा था, वहीं इस सीजन फैशन मार्केट में शर्ट ड्रेसेज छाई हुई हैं। वैसे तो आमतौर पर शर्ट को ट्राउजर, पैंट्स, जीन्स, लेगिंग्स आदि के साथ पेयर किया जाता है लेकिन शर्ट की लेंथ अगर लंबी है तो उसे ड्रेस का नाम दे दिया जाता है। सबसे अच्छी बात यह है कि इसे आप कई तरह से स्टाइल कर सकते हैं और इस मौसम में तो यह कूल और सेफ ऑप्शन है। तो चलिए आज जानते हैं शर्ट ड्रेस को स्टाइल करने के तरीके।

कॉटन और सिल्क शर्ट ड्रेस है ज्यादा डिमांड में

शर्ट ड्रेसेज में आपको कई तरह के फैब्रिक मिल जाएंगे, जैसे कॉटन, सिल्क और डेनिम। कॉटन शर्ट ड्रेस को हर ऑकेजन में पहनी जा सकती है, वहीं सिल्क शर्ट ड्रेस को डेट नाइट जैसे खास मौकों पर कैरी कर सकते हैं। वहीं लाइट डेनिम वाली शर्ट ड्रेस भी दोस्तों के साथ आउटिंग जैसे मौकों पर अट्रैक्टिव लुक देती है। वैसे कुछ मौकों पर लिनेन फैब्रिक की शर्ट भी ग्लैमरस लगती है। दरअसल, ये फैब्रिक बॉडी को कूल बनाए रखते हैं, इसलिए ये समर में बेहतरीन ऑप्शन है।

इस तरह करें स्टाइल

हॉट और एलिगेंट लुक पाने के लिए शर्ट ड्रेस आपकी काफी मदद कर सकते हैं, बस जरूरत है इसके साथ सही अक्सेसरीज का चयन करने की। इस ड्रेस के साथ गोल्डन इयररिंग्स और ब्रेसलेट अच्छी लगती हैं। वहीं आप शर्ट ड्रेस के साथ स्नीकर्स शूज पेयर करके अपना लुक कम्पलीट कर सकती हैं।

लेयर करके भी पहन सकते हैं शर्ट ड्रेस

जरूरी नहीं है कि शर्ट ड्रेस को हमेशा सिंगल ही पहनें। आप इसे श्रग भी बना सकती हैं और एक ओवरसाइज शर्ट की तरह से इसे अपने बाकी आउटफिट्स के साथ भी पेयर कर सकती हैं। अगर आपने फ्लोई ड्रेस पहनी है, तो लेंथ को ध्यान में रखते हुए शर्ट ड्रेस चूज करें। इसे को–ऑर्ड सेट्स, जंपसूट्स, जीन्स–टी के साथ भी लेयर करके पहना जा सकता है।

ये कलर हैं ट्रेंड में

शर्ट ड्रेस में आजकल लाइम येलो, पीकॉक ब्लू जैसे कलर्स खूब डिमांड में हैं। वहीं पिंक जैसे ब्राइट कलर्स को नाइट टाइम में आप ट्राई कर सकते हैं।

बेल्ट के साथ शर्ट

वैसे तो आपको मार्कीट में कई तरह के डिजाइंस मिल जाएंगे, अगर आप कुछ अलग करने की सोच रही हैं तो बेल्ट लगी शर्ट ड्रेस आपकी मदद कर सकती है।

इसके कॉलर और स्लीव में बटन होते हैं। ड्रेस के कलर से डार्क या कंट्रास्ट करती बेल्ट आपके लुक को अट्रैक्टिव बनाने का काम कर सकती है। ये डिजाइन ग्रे और ब्राउन जैसे कलर में लोगों को ज्यादा लुभा रहा है।

शर्ट ड्रेस को कैरी करने का सही तरीका

–शर्ट ड्रेस को अपनी पसंद के मुताबिक मैक्सी, मिनी और मिडी हेमलाइन में ले सकते हैं।

– अगर शर्ट ड्रेस लंबी है तो स्किनी जींस और शूज पहनें।

– बोल्ड लुक के लिए ब्राइट ग्रीन, पिंक और ऑरेंज कलर को चूज करें।

– इंटरव्यू के लिए पहन रही हैं, तो लाइट ब्लू, वाइट व ग्रे कलर की शर्ट ही कैरी करें।

केले के छिलके का चमत्कार, रातभर इस तरीके से इस्तेमाल करने से मिलते हैं फायदे

हम जानते हैं कि केला खाने के लिए ही नहीं, बल्कि सेहत के लिए भी बेहद लाभकारी है। यह शरीर को तुरंत एनर्जी, विटामिन्स और मिनरल्स प्रदान करता है। वर्कआउट करने वाले लोग भी इसे अपनी डाइट में शामिल करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि केले का छिलका भी आपके लिए चमत्कारी फायदे ला सकता है?

दांतों को बनाएं सफेद और चमकदार

अगर आपके दांत पीले पड़ गए हैं या उनमें चमक नहीं है, तो केले का छिलका आपके लिए एक आसान घरेलू उपाय साबित हो सकता है। रोजाना केले के छिलके के अंदर के सफेद हिस्से को हल्के हाथों से अपने दांतों पर रगड़ें। इसमें मौजूद पोटैशियम, मैग्नीशियम और मैंगनीज जैसे मिनरल्स दांतों की सतह पर जमी परत को साफ करते हैं और दांतों की नैचुरल व्हाइटनेस वापस लाते हैं। नियमित रूप से कुछ दिनों तक ऐसा करने से दांत साफ, चमकदार और मजबूत नजर आने लगते हैं।

स्किन कॉर्न्स (त्वचा के दाने) दूर करें

अगर आपकी त्वचा पर कॉर्न्स या हार्ड स्किन की समस्या है, तो केले का छिलका इसमें काफी मददगार साबित हो सकता है। इसके अंदर मौजूद एंजाइम्स और नैचुरल ऑयल्स त्वचा की कठोर परत को मुलायम बनाते हैं और धीरे–धीरे उसे हटाने में मदद करते हैं। इसके लिए केले के छिलके को प्रभावित जगह पर रखें, फिर उसे टेप से चिपकाकर ऊपर से मोजे पहन लें और रातभर ऐसे ही छोड़ दें। नियमित रूप से ऐसा करने से कॉर्न्स नरम होकर धीरे–धीरे खत्म हो जाते हैं और त्वचा फिर से मुलायम और स्वस्थ दिखने लगती है।

मुंहासों और दाग–धब्बों का इलाज

अगर आप मुंहासों, पिंपल्स या दाग–धब्बों से परेशान हैं, तो केले का छिलका एक प्राकृतिक उपाय है जो आपकी त्वचा को राहत दे सकता है। इसमें मौजूद ऐंटिऑक्सिडेंट्स, विटामिन सी और पोटैशियम त्वचा की गहराई से सफाई करते हैं और बैक्टीरिया को खत्म करने में मदद करते हैं। इसके लिए केले के छिलके के अंदरूनी सफेद हिस्से को हल्के हाथों से मुंहासों पर रगड़ें और 10–15 मिनट के लिए छोड़ दें। नियमित रूप से ऐसा करने से मुंहासे सूखने लगते हैं, दाग–धब्बे धीरे–धीरे हल्के होते हैं और चेहरा साफ, मुलायम और चमकदार दिखने लगता है।

काले घेरे कम करें

अगर आपकी आंखों के नीचे काले घेरे हैं और चेहरा थका हुआ दिखता है, तो केले का छिलका इस समस्या को कम करने में मदद कर सकता है। इसमें मौजूद विटामिन सी, विटामिन ई और ऐंटिऑक्सिडेंट्स त्वचा को पोषण देते हैं और डार्क सर्कल्स को हल्का करने में सहायक होते हैं। इसके लिए केले के छिलके के अंदरूनी हिस्से को आंखों के नीचे हल्के हाथों से लगाएँ और 20 मिनट तक रहने दें। इसके बाद ठंडे पानी से चेहरा धो लें। हफ्ते में 2–3 बार ऐसा करने से काले घेरे धीरे–धीरे कम होते हैं और आंखों के नीचे की त्वचा ताजगी और नमी से भर जाती है।

किन लोगों को नहीं करना चाहिए इस्तेमाल?

संवेदनशील त्वचा वाले लोग यदि आपकी स्किन बहुत सेंसिटिव है या किसी चीज से जल्दी जलन होती है, तो केले के छिलके का इस्तेमाल न करें। पहले हाथ पर थोड़ा लगाकर पैच टेस्ट कर लें।

एलर्जी वाले लोगः अगर आपको केले या लेटेक्स से एलर्जी है, तो छिलका लगाने से खुजली, लालपन या जलन हो सकती है। ऐसे लोग इसका उपयोग न करें।

खुले जख्म या कट वाली जगह परः जहां स्किन फटी या कट लगी हो, वहां केले का छिलका न लगाएं, वरना संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है।

तेलिया और एक्ने–प्रोन स्किन वालेः बहुत ऑयली स्किन पर छिलका लगाने से रोमछिद्र बंद हो सकते हैं, जिससे पिंपल्स बढ़ सकते हैं।

केले के छिलके को फेंकने की बजाय आप इसे सौंदर्य और सेहत के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। यह आपकी त्वचा और दांतों के लिए सौंदर्य और स्वास्थ्य दोनों का खजाना साबित हो सकता है।

ओपन पोर्स के कारण मेकअप फ्लॉलेस नहीं दिखता। इस समस्या को दूर करने और स्मूथ चेहरा पाने के लिए, पहले त्वचा को अच्छे से साफ कर हाइड्रेट करें। फिर, सिलिकॉन-बेस्ड पोर-फिलिंग प्राइमर, कंसीलर और अंत में ट्रांसलूसेंट पाउडर का सही इस्तेमाल करें, जिससे मेकअप बेदाग और पोर्स छुपे हुए दिखेंगे।

मेकअप से चुटकियों में छुपाएं ओपन पोर्स, पाएं फ्लॉलेस और स्मूथ चेहरा!

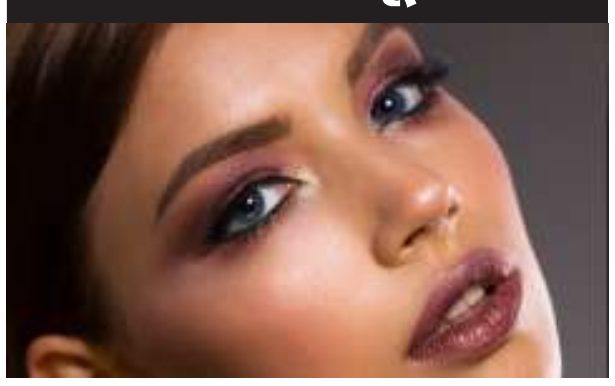

कई बार जब मेकअप करते हैं, तो स्किन स्मूद बिल्कुल नहीं होती है। ओपन पोर्स की वजह मेकअप फ्लॉलेस नहीं दिखता है। स्किन पर ओपन पोर्स होने के कारण मेकअप का लुक एकदम बेकार हो जाता है। वैसे तो इन पोर्स से बचने के लिए स्किन केयर किया जाता है लेकिन फिर भी यह चेहरे से पूरी तरह गायब नहीं होते हैं। अब आपने मेकअप को स्मूद और फ्लॉलेस बनाने के लिए इन मेकअप टिप्स को जरुर फॉलो करें।

फेस को अच्छे से क्लीन करें

मेकअप करने से पहले यह जरुरी होता है कि स्किन को अच्छे से साफ कर लिया जाए। इसके लिए माइल्ड क्लींजर की मदद लें और इसे हाइड्रेट करने के लिए आप ऑयल–फ्री और नॉन कॉमेडोजेनिक मॉइश्चराइजर अप्लाई कर सकते हैं। यदि आपकी स्किन ऑयली है तो जेल बेस्ड मॉइश्चराइजर लगाएं। क्योंकि गंदगी, ऑयल और ड्राई स्किन के कारण ओपन पोर्स ज्यादा दिखते हैं। स्किन हाइड्रेट रहे और फुल टाइट दिखती है, जिससे पोर्स छोटे लगते हैं।

सिलिकॉन बेस्ड पोर–फिलिंग प्राइमर का यूज करें

जब आप मेकअप करें तो प्राइमर का यूज करें। यह लाइट और सिलिकॉन बेस्ड प्राइमर होना चाहिए। आप प्राइमर को पोर्स वाली जगहों जैसे कि नाक, गाल व माथे पर लगाएं। यह आपकी स्किन को स्मूद बनाएगा। इसके साथ ही यह आपके ओपन पोर्स को छिपाने मदद करेगा।

कंसीलर को स्मार्टली अप्लाई करें

यह प्रकार का स्मार्ट हैक है। कंसीलर की मदद से पोर्स को छिपाया जा सकता है। ऐसे में जहां पोर्स नजर आ रहे हैं वहां पर कंसीलर अप्लाई कर सकते हैं। आपके पास कंसीलर नहीं है, तो आप फाउंडेशन अप्लाई कर सकते हैं। यह आपकी स्किन को नेचुरल और स्मूद लुक देगा। इसे आप स्पॉन्ज या उंगली से हल्के हाथों से अप्लाई करें। इसके बाद आप ट्रांसलूसेंट पाउडर को सेट कर सकते हैं। यह पाउडर एक्स्ट्रा ऑयल सोखता है और इससे आपके ओपन पोर्स कम नजर आएंगे। इसका यूज करते समय ध्यान रखें कि इसका ज्यादा यूज न करें, वरना आपकी स्किन केकी लगेगी और ऊपर से पोर्स दिखने लगेंगे।

संक्षिप्त

केंद्रीय कर्मचारियों के लिए सबसे बड़ी खुशखबरी, टर्म ऑफ रेफरेंस को सरकार की मंजूरी

कैबिनेट ने मंगलवार को 8वें केंद्रीय वेतन आयोग (सीपीसी) के कार्यक्षेत्र (टीओआर) को मंजूरी दे दी, जिससे लगभग 50 लाख केंद्र सरकार के कर्मचारियों के वेतन और 65 लाख पेंशनभोगियों के भत्तों में संशोधन होगा। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, 8वां केंद्रीय वेतन आयोग एक अस्थायी निकाय होगा और इसमें एक अध्यक्ष, एक अंशकालिक सदस्य और एक सदस्य–सचिव शामिल होंगे। कैबिनेट द्वारा अनुमोदित संरचना के अनुसार, न्यायमूर्ति रंजना प्रकाश देसाई अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगी। यह पैनल अपने गठन के 18 महीनों के भीतर अपनी सिफारिशें देगा।

सिफारिशें करते समय, आयोग निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखेगाः

देश की आर्थिक स्थिति और राजकोषीय विवेकशीलता की आवश्यकता।

यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता कि विकासात्मक व्यय और कल्याणकारी उपायों के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हों।

गैर–अंशदायी पेंशन योजनाओं की गैर–वित्तपोषित लागत।

राज्य सरकारों के वित्त पर सिफारिशों का संभावित प्रभाव, जो आमतौर पर कुछ संशोधनों के साथ सिफारिशों को अपनाती हैं।

केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और निजी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए उपलब्ध प्रचलित पारिश्रमिक संरचना, लाभ और कार्य स्थितियाँ।

सरकार ने कहा कि यदि आवश्यक हो, तो सिफारिशों को अंतिम रूप दिए जाने पर किसी भी मामले पर अंतरिम रिपोर्ट भेजने पर विचार किया जा सकता है। सातवें वेतन आयोग का कार्यकाल 2026 में समाप्त होगा। 1947 से अब तक सात वेतन आयोग गठित किए जा चुके हैं, जिनमें से अंतिम 2016 में लागू हुआ था। सातवें वेतन आयोग का गठन 2014 में हुआ था और इसकी सिफारिशें 1 जनवरी, 2016 को लागू की गई थीं।

मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ शेयर बाजार; सेंसेक्स 150 अंक टूटा, निफ्टी 26000 के नीचे

नई दिल्ली। एशियाई बाजारों में मुनाफावसूली और कमजोर रुख के बीच मंगलवार को शेयर बाजार के प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी में गिरावट दर्ज की गई। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 150.68 अंक या 0.18 प्रतिशत की गिरावट के साथ 84,628.16 पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 559.45 अंक या 0.65 प्रतिशत गिरकर 84,219.39 अंक पर आ गया था। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 29.85 अंक या 0.11 प्रतिशत गिरकर 25,936.20 पर आ गया। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 7 पैसे गिरकर 88.26 (अनंतिम) पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में ट्रेंट, आईसीआईसीआई बैंक, टेक महिंद्रा, बजाज फिनसर्व, महिंद्रा एंड महिंद्रा, पावर ग्रिड, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और बजाज फाइनेंस प्रमुख रूप से पिछड़ने वाले शेयरों में शामिल रहे। वहीं टाटा स्टील, लार्सन एंड टुब्रो, भारतीय स्टेट बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक प्रमुख लाभ में रहे। ऑनलाइन ट्रेडिंग और वेल्थ टेक फर्म एनरिच मनी के सीईओ पोनमुडी आर ने कहा कि निफ्टी–50 दिन के अधिकांश समय 25,800–26,000 के दायरे में कारोबार करता रहा। यह अमेरिकी फेडरल रिजर्व के नीतिगत नतीजों जैसी प्रमुख वैश्विक घटनाओं से पहले सतर्कतापूर्ण धारणा को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय शेयर बाजारों में उतार–चढ़ाव भरा सत्र देखने को मिला, लेकिन निफ्टी–50 और बैंक निफ्टी दोनों ने कारोबार के अंतिम आधे घंटे में तेज सुधार दर्ज किया, जिससे शेयर बाजार मजबूती के साथ बंद हुआ। एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया का कोस्पी, जापान का निक्केई 225 सूचकांक, शंघाई का एसएसई कम्पोजिट सूचकांक और हांगकांग का हैंगसेंग गिरावट के साथ बंद हुए। यूरोप के बाजारों में मिश्रित रुख रहा। सोमवार को अमेरिकी बाजार सकारात्मक दायरे में बंद हुए। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 1.78 प्रतिशत घटकर 64.42 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने सोमवार को 55.58 करोड़ रुपये के शेयर बेचे। हालांकि, घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने पिछले कारोबार में 2,492.12 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। सोमवार को 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 566.96 अंक या 0.67 प्रतिशत बढ़कर 84,778.84 पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी 170.90 अंक या 0.66 प्रतिशत चढ़कर 25,966.05 पर बंद हुआ।

भारत का स्वच्छ ऊर्जा मिशन तेज, समय से पहले 50 फीसदी गैर–जीवाश्म क्षमता हासिल

नई दिल्ली। नए विश्लेषण के अनुसार, भारत अगर अपनी 500 गीगावाट की गैर–जीवाश्म ऊर्जा स्थापित करने का लक्ष्य समय पर पूरा कर लेता है, तो देश कोयला बिलजी उत्सर्जन के शिखर पर पहुंच सकता है। उर्जा व स्वच्छ वायु अनुसंधान केंद्र (सीआरईए) की रिपोर्ट में दावा किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार दुनियाभर में चीन, भारत और इंडोनेशिया, जो कोयला आधारित ऊर्जा उत्पदान के सबसे बड़े बाजार हैं और पेरिस समझौते के बाद से वैश्विक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के प्रमुख चालक बने हुए हैं। अगर ये तीन देश अपनी स्वच्छ ऊर्जा प्रगति बरकरार रखें, तो 2030 से पहले अपने पावर–सेक्टर उत्पादन के शिखर पर पहुंच सकते हैं। इन देशों की संयुक्त भागीदारी 2024 में वैश्विक कोयला खपत का 73 प्रतिशत होगी। अध्ययन के अनुसार भारत की स्वच्छ बिजली उत्सर्जन में तेजी से वृद्धि हुई है। इसमें 2024 में रिकॉर्ड 29 गीगावाट गैर–जीवाश्म क्षमता और 2025 की पहली छमाही में 25 गीगावाट अधिक की वृद्धि हुई। देश ने 2030 की समयसीमा से काफी पहले ही 50 प्रतिशत का आंकड़ा पार कर लिया है। वहीं तीव्र आर्थिक और जनसंख्या वृद्धि के साथ बिजली की मांग में भी वृद्धि जारी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि देश की वार्षिक सौर मॉड्यूल क्षमता 2025 के मध्य तक 118 गीगावाट थी और 2028 तक 200 गीगावाट तक पहुंचने का अनुमान है। इससे आयात पर निर्भरता कम होगी और स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों को समर्थन मिलेगा।

सूर्यकुमार की फॉर्म पर रहेगी नजर, सैमसन या जितेश किसे मिलेगा मौका ? बुमराह की होगी वापसी

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज गंवाने के बाद अब भारतीय टीम कंगारूओं के खिलाफ पांच मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी। दोनों टीमों के बीच बुधवार को पहला टी20 मुकाबला कैनबरा में खेला जाएगा। इस सीरीज में टीम सूर्यकुमार यादव की अगुआई में खेलने उतरेगी। सूर्यकुमार पिछले कुछ समय से फॉर्म में नजर नहीं आ रहे हैं और उनसे इस सीरीज में बड़ी पारी खेलने की उम्मीद रहेगी।

दोनों टीमों के बीच देखने मिलेगी कड़ी टक्कर

यह लगभग तय है कि भारतीय टीम करीब वही प्लेइंग–11 के साथ उतरेगी जिसके साथ उसने एशिया कप का खिताब जीता था। भारत के पास टी20 की मजबूत टीम है और इसका पता इस बात से ही चल रहा है कि टीम ने पिछले 10 में से आठ मुकाबले जीते हैं, जबकि एक हारा है। वहीं, टीम का एक मैच टाई रहा था। भारतीय टीम के लिए चुनौती आसान नहीं रहेगी क्योंकि कंगारू टीम भी फॉर्म में है और उसने भारत की तरह पिछले 10 में से आठ मैच जीते हैं, जबकि एक मैच में उसे हार मिली है। ऑस्ट्रेलिया का एक मैच बारिश में धुला भी है।

कप्तान के तौर पर बेहतर है सूर्यकुमार का रिकॉर्ड

सूर्यकुमार भले ही बल्ले से योगदान नहीं दे पा रहे हैं, लेकिन कप्तान के तौर पर उनका रिकॉर्ड शानदार है। सूर्यकुमार की अगुआई में भारत ने अब तक 29 में से 23 मुकाबले जीते हैं और इस दौरान टीम ने आक्रामक होकर बल्लेबाजी की है और पहली ही गेंद से विपक्षी गेंदबाजों पर हमलावर रहे हैं। सूर्यकुमार के नेतृत्व में भारत ने अब तक कोई द्विपक्षीय टी20 सीरीज नहीं गंवाई है और हाल ही में पाकिस्तान को हराकर एशिया कप का खिताब भी जीता था।

टी20 विश्व कप 2026 अब ज्यादा दूर नहीं है, ऐसे में भारत की तैयारियों के लिहाज से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ये सीरीज काफी अहम है। भारत को इस वैश्विक टूर्नामेंट से पहले करीब 15 टी20 मुकाबले खेले हैं। अगर ऑस्ट्रेलिया में टीम को सकारात्मक नतीजे मिलते हैं तो इससे टीम का मनोबल बढ़ेगा। मुख्य कोच गौतम गंभीर ने सूर्यकुमार की फॉर्म को लेकर चिंताओं को खारिज किया, लेकिन सूर्यकुमार को जल्द ही फॉर्म में लौटना होगा।

गिल–अभिषेक करेंगे पारी की शुरुआत

एक बार फिर शुभमन गिल और अभिषेक शर्मा पारी की शुरुआत करते नजर आएंगे। एशिया कप में अभिषेक शानदार फॉर्म में थे और ऑस्ट्रेलियाई परिस्थितियों में भी उनसे इसी तरह का प्रदर्शन करने की उम्मीद थी। ऑस्ट्रेलिया की पिच पर अभिषेक के सामने चुनौती रहेगा, ऐसे में कप्तान का योगदान काफी महत्वपूर्ण होगा। वहीं, चौथे स्थान पर तिलक वर्मा उतरेंगे, जबकि हार्दिक पांड्या की अनुपस्थिति में शिवम दुबे पर बल्ले और गेंद दोनों से प्रदर्शन करने का जिम्मा रहेगा। एशिया कप फाइनल में साहसिक पारी खेलने वाले तिलक वर्मा और अक्षर पटेल मध्य क्रम का जिम्मा संभालेंगे, जबकि अगर भारत एक अतिरिक्त बल्लेबाज के साथ उतरेगा तो रिंकू सिंह की जगह भी एकादश में बन सकती है।

सैमसन को मिल सकती है तरजीह

विकेटकीपर के तौर पर संजू सैमसन को जितेश शर्मा पर तरजीह मिल सकती है। सैमसन ने पूरे एशिया कप के दौरान विकेटकीपिंग का जिम्मा संभाला था और वह पहले मैच में भी प्लेइंग–11 में शामिल रह सकते हैं। ऐसे में जितेश को एकादश में जगह बनाने के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। गेंदबाजी की बात करें को स्पिन विभाग का जिम्मा अक्षर और वरुण चक्रवर्ती संभालेंगे, जबकि भारत दो विशेषज्ञ गेंदबाजों के साथ उतर सकता है। इस स्थिति में जसप्रीत बुमराह और अर्शदीप सिंह टीम प्रबंधन की पसंद होंगे। बुमराह वनडे सीरीज का हिस्सा नहीं थे और टी20 सीरीज से वह टीम में वापसी करेंगे।

मानुका ओवल की पिच पर बाउंस देखने मिल सकती है और अगर टीम प्रबंधन तीन तेज गेंदबाजों के साथ उतरेगा तो हर्षित बुमराह और अर्शदीप के साथ जिम्मा संभालेंगे। इस स्थिति में रिंकू के लिए प्लेइंग–11 में जगह नहीं बन सकेगी। यह देखना दिलचस्प होगा कि भारत पहले टी20 में किस संयोजन के साथ उतरता है।

इस मैच के लिए दोनों टीमों की संभावित प्लेइंग–11 इस प्रकार है...

भारतरू अभिषेक शर्मा, शुभमन गिल, सूर्यकुमार यादव (कप्तान), तिलक वर्मा, शिवम दुबे, संजू सैमसन (विकेटकीपर), अक्षर पटेल, रिंकू सिंह, वरुण चक्रवर्ती, जसप्रीत बुमराह और अर्शदीप सिंह।

ऑस्ट्रेलियारू ट्रेविस हेड, मिचेल मार्श (कप्तान), मैथ्यू शॉर्ट, जोश इंगलिस (विकेटकीपर), टिम डेविड, मार्कस स्टोइनिस, मिचेल ओवन, सीन एबॉट, नाथन एलिस, मैथ्यू कुहनेमैन, जोश हेजलवुड।

'हेजलवुड की लय बिगाड़ देंगे', इस पूर्व भारतीय बल्लेबाजी कोच ने अभिषेक की फॉर्म पर भरोसा जताया

नई दिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व बल्लेबाजी कोच अभिषेक नायर का कहना है कि ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड ने भले ही वनडे सीरीज में भारतीय बल्लेबाजों को परेशान किया हो, लेकिन उनके सामने अभिषेक शर्मा जैसे आक्रामक बल्लेबाज की चुनौती नहीं टिक पाएगी। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बुधवार से पांच मैचों की टी20 सीरीज खेली जाएगी। इससे पहले नायर ने कहा कि अगर अभिषेक फॉर्म में हों तो उन्हें रोकना काफी मुश्किल होता है।

अभिषेक शर्मा एशिया कप 2025 में शानदार फॉर्म में थे जहां वह शीर्ष स्कोरर रहे थे। उन्होंने टूर्नामेंट में भारत को अजेय रहते हुए जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। आईपीएल के एक शानदार सीजन के बाद टी20 क्रिकेट के शीर्ष बल्लेबाज अभिषेक ने 2024 से अपने करियर में कई ऊंचाइयां हासिल की है। अभिषेक नायर ने कहा कि बाएं हाथ के इस बल्लेबाज में जोश हेजलवुड पर हावी होने की क्षमता है जो भारत के खिलाफ पिछले तीन वनडे मैचों में शानदार फॉर्म में दिखे थे।

अभिषेक ने कहा, अगर अभिषेक शर्मा फॉर्म में हैं तो हेजलवुड आउट ऑफ फॉर्म होंगे। जिस तरह से वह बल्लेबाजी करते हैं वह पहली गेंद पर चौका या छक्का लगाने के लिए जाने जाते हैं। अगर आप पावरप्ले में डर पैदा करते हैं तो यह पूरी पारी में बना रहता है। अभिषेक शर्मा का खेल पर यही प्रभाव है।

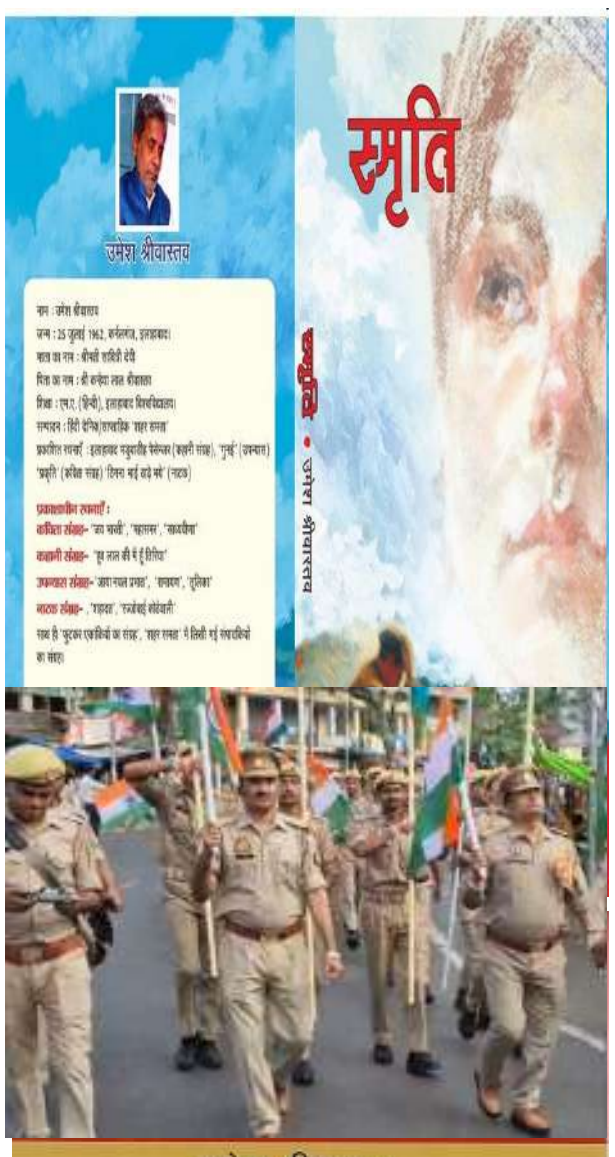

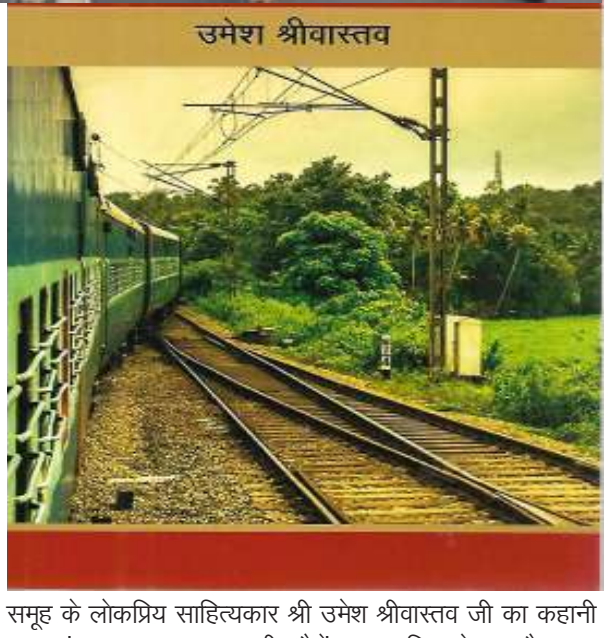

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

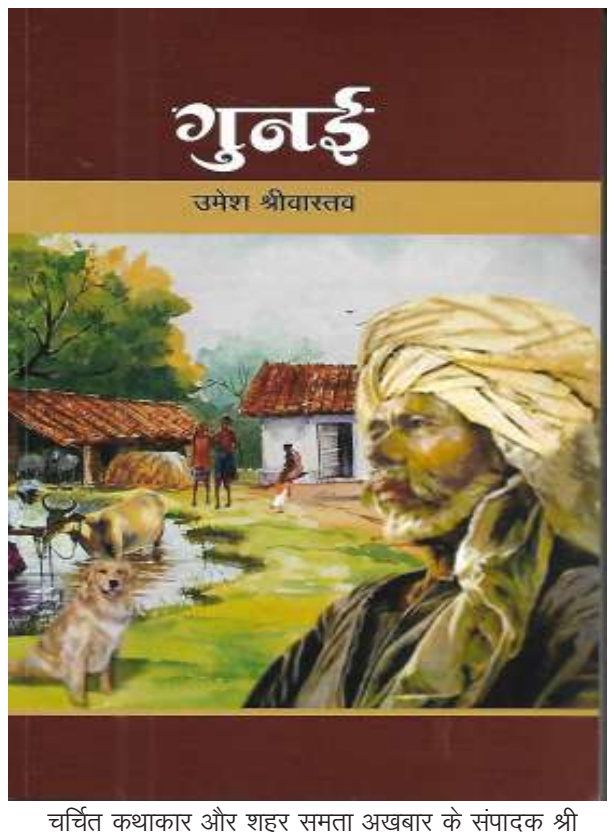

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

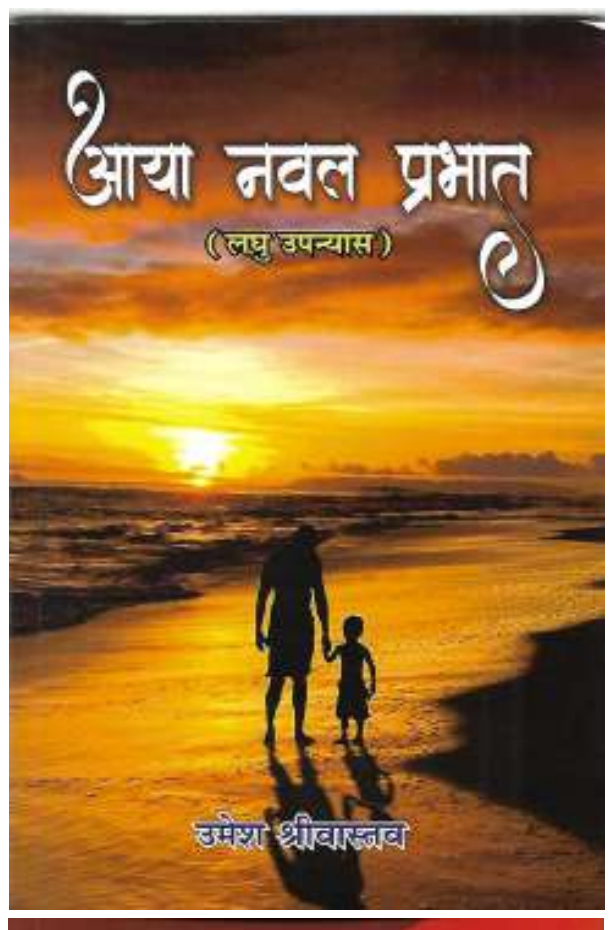

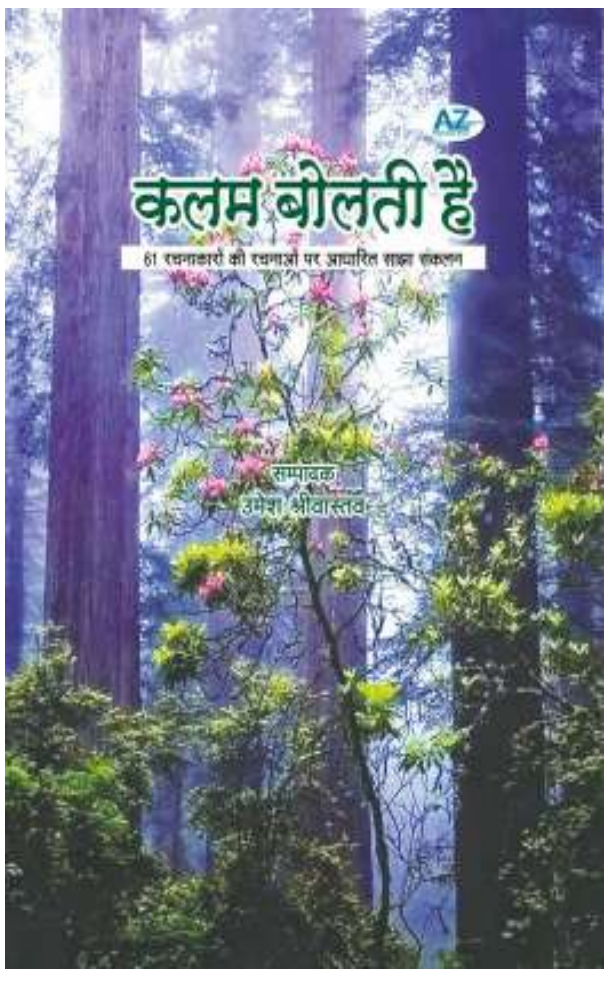

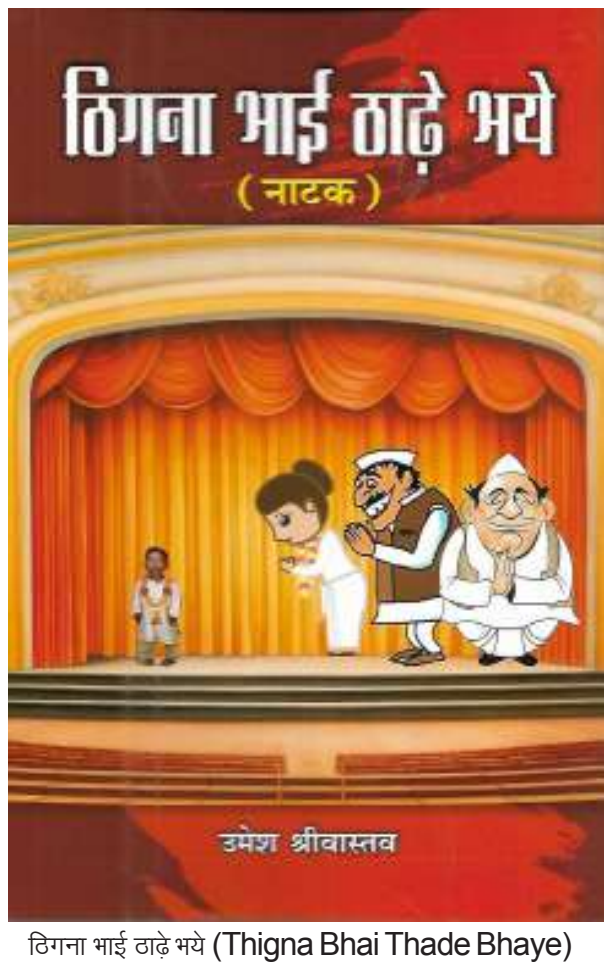

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

ट्रंप–ताकाइची ने यूएस–जापान संबंधों के 'स्वर्णिम युग' की नींव रखी, चीन को दिया बड़ा संदेश

जापान की नई प्रधानमंत्री साने ताकाइची ने टोक्यो में डोनाल्ड ट्रंप के साथ बैठक की शुरुआत में अमेरिका के साथ अपने देश के संबंधों में एक 'स्वर्णिम युग' लाने का संकल्प लिया है। ट्रंप, जो एशिया के एक सप्ताह के दौरे के दूसरे चरण में जापान में हैं, और ताकाइची ने दुर्लभ मृदा और अन्य महत्वपूर्ण खनिजों के खनन और प्रसंस्करण को सुरक्षित करने के लिए एक रूपरेखा तैयार करने वाले एक समझौते पर शीघ्र ही हस्ताक्षर किए। यह चीन द्वारा इन सामग्रियों पर निर्यात नियंत्रण कड़ा करने के हालिया निर्णय के बाद आया है, जो कई उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण हैं। तीव्र व्यापार युद्ध के बीच ट्रंप इस सप्ताह दक्षिण कोरिया में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से महत्वपूर्ण वार्ता के लिए मिलने वाले हैं।

ट्रंप ने जापान की नयी प्रधानमंत्री की प्रशंसा की

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को अपनी एशिया यात्रा के सबसे व्यस्त दिनों में से एक की शुरुआत में जापान की प्रधानमंत्री साने ताकाइची से मुलाकात की और दोनों देशों को ''सबसे मजबूत स्तर पर सहयोगी'' करार दिया। ट्रंप की तोक्यो के निकट एक अमेरिकी नौसैनिक अड्डे पर खड़े विमानवाहक पोत 'यूएसएस जॉर्ज वाशिंगटन' पर अमेरिकी सैनिकों से बात करने और व्यापारिक नेताओं से मुलाकात करने भी योजना है।

एशिया में अमेरिका के सबसे मजबूत सहयोगियों में शामिल जापान

ट्रंप एशिया में अमेरिका के सबसे मजबूत सहयोगियों में शामिल जापान की यात्रा कर रहे हैं, फिर भी उनकी यात्रा के दौरान कई बातों को लेकर अनिश्चितता की स्थिति है। कुछ ही दिन पहले देश की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं साने ताकाइची को अपने देश के आर्थिक हितों की रक्षा करते हुए ट्रंप के साथ अपने रिश्ते मजबूत करने होंगे। ट्रंप एक व्यापार समझौते के तहत 550 अरब अमेरिकी डॉलर का जापानी निवेश हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं जिससे अमेरिकी शुल्क कम होंगे।

जापान वाशिंगटन को चेरी के 250 पेड़ देगा

ट्रंप के साथ मंगलवार को मुलाकात के दौरान ताकाइची ने बताया कि जापान अगले साल अमेरिका की 250वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वाशिंगटन को चेरी के 250 पेड़ देगा और चार जुलाई के इस समारोह के लिए अकिता प्रांत से आतिशबाजी भी करेगा। उन्होंने अपनी शुरुआती टिप्पणियों में जापान के पूर्व प्रधानमंत्री और अपने गुरु शिंजो आबे का जिक्र करते हुए कहा, ''दरअसल (पूर्व) प्रधानमंत्री आबे मुझे आपकी बेहतरीन कूटनीति के बारे में अक्सर बताते थे।'' ट्रंप ने जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में उनकी भूमिका को ''बड़ी बात'' बताया और जापान के प्रति अमेरिका की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। ट्रंप ने कहा, ''हम जापान की मदद के लिए हमेशा तैयार रहेंगे। हम सबसे मजबूत स्तर पर सहयोगी हैं।'' दोनों नेताओं ने अपने राष्ट्रों के गठबंधन के ''स्वर्णिम युग'' के कार्यान्वयन के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। समझौते की विषयवस्तु स्पष्ट नहीं है। इसके बाद ट्रंप और ताकाइची ने एक अन्य समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें महत्वपूर्ण खनिजों और दुर्लभ मृदाओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए रूपरेखा तैयार की गई। ट्रंप सोमवार को तोक्यो पहुंचे थे जहां उन्होंने औपचारिक यात्रा के तहत सम्राट से मुलाकात की। इससे पहले वह मलेशिया के कुआलालंपुर में थे, जहां उन्होंने दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ के वार्षिक शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

संक्षिप्त

तुर्किये में फिर आया शक्तिशाली भूकंप, पश्चिमी इलाके में ढहीं इमारतें, लोगों में दहशत

तुर्किये में एक बार फिर से भूकंप का काल आया है। भूकंप के कारण लोग एक बार फिर से सहम गये और अपने घरों से बाहर निकल गये। पश्चिमी तुर्किये में सोमवार को 6.1 तीव्रता का भूकंप आने से कम से कम तीन इमारतें ढह गईं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि जो इमारतें ढही हैं, वे पूर्व में आए एक भूकंप के कारण पहले ही क्षतिग्रस्त हो गई थीं। उन्होंने बताया कि इस दौरान किसी के

हताहत होने की फिलहाल कोई खबर नहीं है। आपदा एवं आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी (एएफएडी) के अनुसार, स्थानीय समयानुसार रात 10 बजकर 48 मिनट पर आए 6.1 तीव्रता के इस भूकंप का केंद्र बालिकेसिर प्रांत के सिंदिरगी शहर में जमीन से 5.99 किलोमीटर की गहराई में था।भूकंप के बाद आए कई झटके इस्तांबुल और आसपास के बर्सा, मनीसा और इजमिर प्रांतों में महसूस किए गए। देश के गृह मंत्री अली येरलिकाया ने बताया कि सिंदिरगी में कम से कम तीन खाली इमारतें और दो मंजिला एक दुकान ढह गई। ये इमारतें पहले आए भूकंप में क्षतिग्रस्त हो चुकी थीं। सिंदिरगी के जिला प्रशासक डोगुकन कोयुनकू ने सरकारी अनादोलु एजेंसी से कहा, ''किसी की मौत होने की फिलहाल कोई जानकारी नहीं मिली है लेकिन हम अपना आकलन जारी रखे हुए हैं।'' अगस्त में सिंदिरगी में भी 6.1 तीव्रता का भूकंप आया था जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई थी और दर्जनों अन्य लोग घायल हो गए थे। तब से बालिकेसिर के आसपास के क्षेत्र में कम तीव्रता वाले भूकंप आते रहे हैं। तुर्किये में 2023 में आए 7.8 तीव्रता के भूकंप के कारण 53,000 लोगों की मौत हो गई थी और 11 दक्षिणी एवं दक्षिण–पूर्वी प्रांतों में लाखों इमारतें नष्ट या क्षतिग्रस्त हो गई थी। पड़ोसी देश सीरिया के उत्तरी हिस्सों में भी 6,000 लोग मारे गए थे।

नहीं टिक पाया ट्रंप का युद्ध विराम, इजरायल ने गाजा में ताबड़तोड़ हमले से इसे धुंआ–धुआं किया

भले ही गाजा में शांति के दावे और सीजफायर कराने का क्रेडिट दुनिया में घूम घूम कर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ले रहे हैं। इजरायली प्रधानमंत्री नेतन्याहू ट्रंप की शान में संसद में कसीदे पढ़ रहे हो। लेकिन गाजा से आ रही ताजा तस्वीरें तो अलग ही कहानी बयां कर रही हैं। गाज़ा में अभी भी हमास आतंकियों और इजराइल डिफेंस फोर्सेस के बीच संघर्ष जारी है। जिसकी ताजा तस्वीरें सामने आई हैं। हमास के गढ़ तलल हवा शहर में हमास आतंकियों ने इजरायली सेना पर बड़ा हमला बोला। इजरायली सैनिकों पर हमास ने अचानक हमला बोल दिया। जिसमें एक इजरायली फौजी की मौत हो गई। वहीं दर्जनों घायल हुए। उधर हमास के हमलों के जवाब में इजराइल गाज़ा में लगातार बम बरसा रहा है। हमास के ठिकानों पर इजरायली सेना चुन–चुन कर बमबारी कर रही है। गाजा में हो रही इसी बमबारी की वजह से मिस्र में जो शांति समझौता हुआ वो अमल में नहीं आ पा रहा है। गाज़ा के पुनर्निर्माण के लिए अरब देशों में भी तकरार शुरू हो गई है। खाड़ी क्षेत्र के तीन प्रमुख देश क़तर, सऊदी अरब और यूएई गाज़ा के भविष्य को लेकर आमने–सामने खड़े हो गए हैं। एक तरफ जहां यूएई और सऊदी अरब ने यह शर्त रख दी है कि वो गाज़ा में तभी पुनर्निर्माण का कार्य शुरू करेगा जब हमास अपने सारे हथियारों को सरेंडर कर देगा। दूसरी तरफ क़तर इस पूरे समीकरण में खुद को मध्यस्थ और गाजा के लोगों को पालने वाले देश के तौर पर प्रोजेक्ट कर रहा है। उसका कहना है कि गाजा में तत्काल राहत और पुनर्निर्माण कार्य शुरू होने चाहिए। कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी ने अमेरिकी राष्ट्रपति के एयर फ़ोर्स वन जेट में ईंधन भरने के लिए अल उदीद एयरबेस पर ट्रंप से मुलाकात की। कतर की समाचार एजेंसी फछ। द्वारा प्रकाशित एक बयान के अनुसार, ट्रंप ने क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखने में उनकी भूमिका के लिए अमीर और कतर को धन्यवाद और प्रशंसा व्यक्त की। बयान में कहा गया है कि उन्होंने प्रमुख क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों और घटनाक्रमों के साथ–साथ गाजा पट्टी और कब्जे वाले फिलिस्तीन की वर्तमान स्थिति पर भी चर्चा की, विशेष रूप से क्षेत्र में शांति बनाए रखने, गाजा में युद्ध समाप्त करने के समझौते को मजबूत करने और पक्षों द्वारा इसके सभी प्रावधानों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने से संबंधित मुद्दों पर।

केन्या के क्वाले में विमान क्रैश, 12 लोग थे सवार, सभी की मौत की आशंका

नैरोबी। केन्या के तटीय क्षेत्र में आने वाले क्वाले में मंगलवार सुबह एक छोटा विमान क्रैश हो गया। बताया गया है कि विमान लोकप्रिय पर्यटन केंद्र मासई मारा नेशनल रिजर्व जा रहा था। इसमें 12 लोग सवार थे। अधिकारियों के मुताबिक, हादसे में किसी के भी बचने की उम्मीद नहीं है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह क्रैश क्वाले के पहाड़ी क्षेत्र में दियानी एयरस्ट्रिप से करीब 40 किलोमीटर दूर हुआ। क्वाले काउंटी के आयुक्त स्टीफन ओरिंदे के मुताबिक, जहां विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ है, वहां बचाव अभियान चलाया जा रहा है। फिलहाल हादसे की वजहों की जांच की जा रही है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र

पाकिस्तान के साथ हो गया बड़ा खेल, 25000 सैनिक उठा ले गया सऊदी अरब

पाक अब संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), कतर और पड़ोसी देश अजरबैजान के साथ ट्रिपल मिलिट्री अलायंस करने जा रहा है। इसे गल्फ कैस्पियन डिफेंस एंड सिक्योरिटी अलायंस का नाम दिया गया है। सूत्रों के अनुसार अगले महीने दोहा में इस अलायंस की औपचारिक घोषणा होगी। पाक आर्मी चीफ आसिम मुनीर इन तीनों देशों के साथ संपर्क में हैं। ये अलायंस पाक–सऊदी अरब सैन्य करार के मॉडल पर आधारित होगा। यानी इसमें शामिल देश सैन्य गठजोड़ करेंगे और किसी भी देश पर हमले को साझा हमला मानकर जवाब दिया जाएगा। पाकिस्तान ने यूएई, कतर और अजरबैजान की सेना को ट्रेनिंग देने का भी ऐलान किया है। बताया जा रहा है कि खाड़ी का एक अन्य देश बहरीन भी अलायंस में शामिल होना चाहता है। सितंबर में हुए सैन्य करार के बाद पाक सेना अपने ढाई हजार जवानों को सऊदी अरब भेज चुकी है। लेकिन अब खबर है कि सऊदी अरब ने पाकिस्तान के साथ बहुत बड़ा खेल कर

दिया है। सऊदी अरब पाकिस्तान के 25,000 सैनिक उठा ले गया है। इन हजारों सैनिकों का काम सऊदी अरब के दुश्मनों खासतौर पर इजरायल से लड़ना है। पाकिस्तान के 25,000 सैनिकों को लेकर जो खुलासा हुआ है, उसने सबको हैरान कर दिया है। दरअसल पाकिस्तान पिछले कई दिनों से हवा बना रहा था कि सऊदी अरब के साथ उसकी जो डिफेंस डील हुई है, उसके मुताबिक एक देश पर हमला दूसरे देश पर भी हमला माना जाएगा। लेकिन इस डील के बारे में जो पाकिस्तान ने किसी को नहीं बताया वो अब सामने आया है। सच यह है कि इस डील ने पाकिस्तान को सऊदी अरब का इक्वल डिफेंस पार्टनर नहीं बनाया है बल्कि सऊदी अरब का गुलाम बना दिया है। पाकिस्तान को लगा था कि इस डील के चलते सऊदी अरब उसे भारत और अफगानिस्तान के हमलों से बचाएगा। लेकिन सूत्रों के मुताबिक सऊदी अरब ने साफ कर दिया है कि आगे चलकर अगर भारत और अफगानिस्तान पाकिस्तान पर हमला करते हैं तो ऐसी स्थिति में सऊदी अरब डिप्लोमेटिकली पाकिस्तान की भारत और अफगानिस्तान से दोस्ती कराने की कोशिश करेगा। सऊदी अरब भारत और अफगानिस्तान के खिलाफ कोई मिलिट्री एक्शन नहीं लेगा। इसका सबसे बड़ा सबूत हाल ही में सऊदी अरब ने पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच हुई जंग में दे दिया था। सऊदी अरब ने डिप्लोमेटिकली अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच दोस्ती करवाने की कोशिश की। लेकिन पाकिस्तान को साफ–साफ कह दिया कि तालिबान के हमलों से खुद ही निपटो। हमें बीच में घसीटने की कोई जरूरत नहीं है। सऊदी अरब ने पाकिस्तान को यह भी साफ कर दिया है कि भारत जैसे देश के खिलाफ मिलिट्री एक्शन का तो सवाल ही नहीं है। अब एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि सऊदी अरब ने यह डिफेंस डील पाकिस्तान को बचाने या पाकिस्तान पर हमला करने वाले देश पर हमला करने के लिए नहीं की है बल्कि खुद को इजराइल से बचाने के लिए की है। इस डील का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि पाकिस्तान अपने 25,000 सैनिक सऊदी अरब के अलग–अलग इलाकों में तैनात करेगा। पाकिस्तान के 25,000 सैनिक सऊदी अरब की सुरक्षा के लिए काम करेंगे।

क्या है डूरंड रेखा विवाद, जिसको लेकर काबुल से पाकिस्तान पर फतह का आया तालिबानी फरमान

काबुल से पाकिस्तान पर फतह का आया तालिबानी फरमान दे दिया है। इस फरमान का दावा उस नूर अली महसूद ने किया है जो तहरीक एक तालिबान पाकिस्तान का चीफ कमांडर है और मुनीर फौज का सबसे बड़ा दुश्मन है। जिसने बीती रात ही पाकिस्तान के पांच सैनिक मार गिराए हैं। यानी तालिबान ने पाकिस्तानी फौज को एक बार फिर से मारा है। जिसके बाद पाकिस्तान बुरी तरह से बौखला गया है। पाकिस्तान समझ नहीं

पा रहा है कि अफगान तालिबान जिसे उसने ही पैदा किया है, उससे कैसे निपटा जाए। पाकिस्तान में लोग अफगान तालिबान को भला बुरा कह रहे हैं। अफगानिस्तान के खिलाफ खुली जंग छेड़ने की धमकी दी जा रही है। लेकिन इसके बावजूद न तो अफगानिस्तान में तालिबान के और न ही पाकिस्तान के अंदर तहरीक ए तालिबान के हौसलों में कोई कमी आई है। तालिबान के नेता और कमांडर लगातार पाकिस्तान को सबक सिखाने की धमकी दे रहे हैं।

तालिबान ने अब कितने पाकिस्तानी फौजी मारे?

पाकिस्तान की सेना ने खुद इस बात की जानकारी दी है कि अफगानिस्तान की तरफ से हुए हमले में पांच पाकिस्तानी सैनिकों की मौत हो गई। पाकिस्तान की सेना के कुछ तालिबान लड़ाकों को मारने का भी दावा किया है। ये झड़पें अफगान सीमा के पास खैबर पख्तूनवा प्रांत में हुई है, जिसे टीटीपी का गढ़ माना जाता है। पाकिस्तानी सेना का दावा है कि अफगानिस्तान से हथियारबंद लड़ाकों ने सीमा पार करने की कोशिश की और इस दौरान पाकिस्तानी सेना ने उन पर अटैक कर दिया। इसके जवाब में अफगानी लड़ाकों ने पांच पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया और बड़ी संख्या में खैबर पख्तूनवा में घुसपैठ कर ली। यानी आने वाले वक्त में पाकिस्तान पर और बड़े हमले होने वाले हैं।

पश्तून को विभाजित करने वाली रेखा

अफगानिस्तान और पाकिस्तान की तालिबानी हुकूमत के बीच के रिश्ते अब तक के सबसे खराब दौर में जा पहुंचे हैं। लेकिन दोनों की दुश्मनी की कहानी इतिहास के जड़ों से जुड़ी हैं। डूरंड रेखा रूसी और ब्रिटिश साम्राज्यों के बीच 19वीं शताब्दी के खेल की विरासत है जिसमें अफगानिस्तान को अंग्रेजों द्वारा रूस के विस्तारवाद की भय की वजह से के खिलाफ एक बफर के रूप में इस्तेमाल किया गया था। 12 नवंबर 1893 में अफगान शासक आमिर अब्दुल खान और ब्रिटिश सरकार के सचिव सर मार्टिमर डूरंड ने सरहद हदबंधी के समझौते पर दस्तखत किए। दूसरे अफगान युद्ध की समाप्ति के दो वर्ष बाद 1880 में अब्दुर रहमान राजा बने, जिसमें अंग्रेजों ने कई क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया जो अफगान साम्राज्य का हिस्सा थे। डूरंड के साथ उनके समझौते ने भारत के साथ अफगान ष्सीमाष पर उनके और ब्रिटिश भारत के ष्प्रभाव के क्षेत्रोंष की सीमाओं का सीमांकन किया। डूरंड्स कर्सरू ए लाइन अक्रॉस द पठान हार्ट नामक किताब के लेखर राजीव डोगरा के अनुसार सात–खंड के समझौते ने 2,670 किलोमीटर की रेखा को मान्यता दी। डूरंड ने आमिर के साथ अपनी बातचीत के दौरान अफगानिस्तान के एक छोटे से नक्शे पर खींच दी थी। 2,670 किलोमीटर की रेखा चीन की सीमा से लेकर ईरान के साथ अफगानिस्तान की सीमा तक फैली हुई है। इसके खंड 4 में कहा गया है कि ष्सीमा रेखाष को विस्तार से निर्धारित किया जाएगा और ब्रिटिश और अफगान आयुक्तों द्वारा सीमांकित किया जाएगा। जिसमें स्थानीय गावों के हितों को शामिल करने की भी बात थी।

वास्तविकता इससे काफी अलग

वास्तव में रेखा पश्तून आदिवासी क्षेत्रों से होकर गुजरती है, जिससे गॉव, परिवार और भूमि का बंटवारा हो जाता है। इसे ष्घृणा की रेखाष, मनमाना, अतार्किक, क्रूर और पश्तूनों पर एक छल के रूप में वर्णित किया गया है। कुछ इतिहासकारों का मानना घ्है कि यह पश्तूनों को विभाजित करने की एक चाल थी ताकि अंग्रेज उन पर आसानी से नियंत्रण रख सकें। इससे वे खाबेर दर्रे को अपने कब्जे में रखना चाहते थे।

अफगान–पाक तनाव

1947 में स्वतंत्रता के साथ भारत–पाक बंटवारा हुआ और उसे डूरंड रेखा विरासत में मिली। इसके साथ ही पश्तून ने रेखा को अस्वीकार कर दिया और अफगानिस्तान द्वारा इसे मान्यता देने से इनकार कर दिया। 1947 में संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान के शामिल होने के खिलाफ मतदान करने वाला अफगानिस्तान एकमात्र देश था।

भारत और अमेरिका की नौसेनाओं का पनडुब्बी–रोधी युद्ध अभ्यास संपन्न, मजबूत हुआ आपसी तालमेल और क्षमता

वॉशिंगटन। भारत और अमेरिका ने पनडुब्बी–रोधी युद्ध (एएसडब्ल्यू) और समुद्री क्षेत्र में जागरूकता पर केंद्रित संयुक्त युद्ध अभ्यास किया, ताकि दोनों नौसेनाओं के बीच आपसी तालमेल और क्षमता को मजबूत किया जा सके। अमेरिका के सातवें बेड़ा ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, अमेरिका और भारत की नौसेनाएं साथ उड़ान भर रही हैं। डिएगो गार्सिया के पास संयुक्त पी–8 प्रशिक्षण ने पनडुब्बी–रोधी युद्ध कौशल और समुद्री क्षेत्र की जागरूकता को निखारा और हिंद–प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने की हमारी सामूहिक क्षमता को बढ़ाया। रक्षा दृश्य सूचना वितरण सेवा (डीवीआईडीएस) ने एक आधिकारिक बयान में कहा, श्कमांडर टास्क फोर्स 72श (सीटीएफ) के मिशन में समुद्री गश्ती और टोही विमान (एमपीआरए) पी–8ए पोसाइडन ने भारतीय नौसेना के एमपीआरए पी–8आई के साथ डिएगो गार्सिया और हिंद महासागर के पास संयुक्त अभ्यास में भाग लिया। यह अभ्यास 22 से 28 अक्तूबर के बीच आयोजित किया गया था। पी–8आई के डिएगो गार्सिया पहुंचने के बाद अमेरिकी और भारतीय चालक दल ने अभ्यास के लिए संचालन योजना पर मिलकर काम किया, जिससे समुद्री में सूचना साझा करने और सहयोग की नींव रखी गई।

इस तट आधारित चरण को संयुक्त उड़ान और द्विपक्षी पनडुब्बी–रोधी और संचार अभ्यास के साथ पूरा किया गया। बयान में कहा गया, पैट्रोल स्क्वाड्रन (वीपी) 4 को सीटीएफ 72 में तैनात किया गया, जो अमेरिकी नौसेना के सातवें बेड़े समुद्री गश्ती और टोही विमानों के लिए कमान एवं नियंत्रण मुख्यालय है। यह बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से क्षेत्रीय सुरक्षा और संचालन को बढ़ावा देता है और निगरानी व टोही की क्षमताएं प्रदान करता है। अमेरिकी नौसेना का सातवां बेड़ा अग्रिम मोर्चे पर तैनात सबसे बड़ा बेड़ा है। यह बेड़ा अपने नियमित रूप से अपने साझेदारों के साथ संवाद करता है, ताकि एक स्वतंत्र और खुले हिंद–प्रशांत क्षेत्र के दृष्टिकोण को साकार किया जा सके।बयान में बताया गया कि यह प्रशिक्षण टाइगर ट्रायम्फ 2025 जैसे पहले के अंतर संचालन अभ्यासों पर आधारित था। इन अभ्यासों में भारतीय और अमेरिकी सशस्त्र बलों ने संयुक्त संचार और युद्ध क्षमता बढ़ाने के लिए उपग्रह और बिना चालक वाले (अनमैन्ड) तकनीकों का उपयोग किया।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

इस्राइल का समर्थन करने पर हुई पाकिस्तानी पत्रकार की बेरहमी से हत्या

इस्लामाबाद। पाकिस्तान कट्टरपंथ की चपेट में इस कदर आ चुका है कि वहां अब जनभावना के विपरीत बात करना भी जानलेवा हो गया है।

पाकिस्तान में एक पत्रकार को इस्राइल के समर्थन में बात करने के लिए ही जान से हाथ धोना पड़ गया। पाकिस्तान के सिंध प्रांत के गृह मंत्री ने खुलासा करते हुए बताया कि, बीते हफ्ते कराची में हुई एक पत्रकार की हत्या एक चरमपंथी इस्लामी ग्रुप के सदस्यों ने कर थी, क्योंकि उसने अपने टेलीविजन चैनल पर इस्राइल के समर्थन में टिप्पणी कर दी थी।

सिंध प्रांत के गृह मंत्री जियाउल हसन ने दावा किया कि पत्रकार और एंकर इम्तियाज मीर की हत्या के आरोप में चार संदिग्ध आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया है।

इम्तियाज मीर को 21 सितंबर को कराची के मलिर इलाके में उनके ऑफिस से निकलते समय गोली मार दी गई थी। गृह मंत्री ने कहा कि मारे गए पत्रकार को इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि हत्यारे उसे इस्राइल का कथित हमदर्द मानते थे और उसकी कथित इस्राइल समर्थक टिप्पणियों से नाराज थे। इसी के चलते पत्रकार की हत्या कर दी गई।

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।